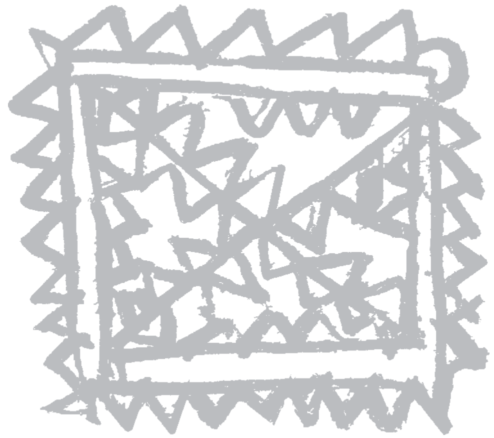
कोरकू गीत

राधेश्याम बि. शांडिल्य



कोरकू गीत

राधेश्याम बि. शांडिल्य

सम्पादक
डॉ. कपिल तिवारी

सहायक सम्पादक
अशोक मिश्र

आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादेमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
भोपाल का प्रकाशन

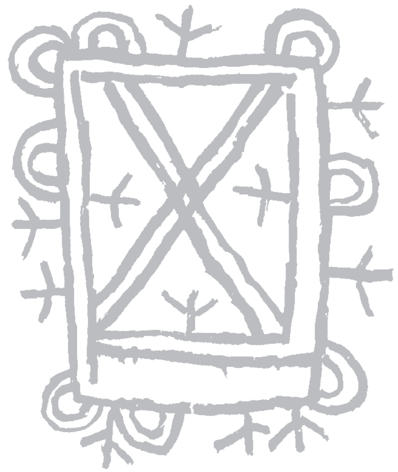
प्रकाशक	– निदेशक आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादेमी मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् मुल्ला रमूज़ी संस्कृति भवन, आधार तल, बाणगंगा, भोपाल मध्यप्रदेश–462003 फोन–2551878, 2760668 www.mpculture.in E-mail:mplokkala@rediffmail.com
प्रकाशन	– वर्ष 2008
मूल्य	– 50/– (रुपये पचास केवल)
स्वत्वाधिकार	– आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादेमी मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
मुद्रण	– शासकीय केन्द्रीय मुद्रणालय, भोपाल
सहयोग	– डॉ. महेश चन्द्र शांडिल्य

आमुख

प्रस्तुत पुस्तक की विषयवस्तु 'मध्यप्रदेश की कोरकू जनजाति के लोकगीत' से संबंधित है। कोरकू मध्यप्रदेश में छिंदवाडा, बैतूल, होशंगाबाद, पूर्वी तथा पश्चिमी निमाड़ तथा महाराष्ट्र के अकोला एवं मोर्शी के ग्रामों में बसे हुये हैं।

इन आदिवासियों के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन को काफी निकट से देखने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ है। यह कि मेरा जन्म ग्राम-टेमलाबाड़ी, हरदा में हुआ है। इनके समाज की अकृत्रिमता, अनूठेपन और सहज वैचित्र ने सदैव ही मुझे अध्ययन के लिए प्रेरित किया है। कोरकुओं के लोकगीतों से संबंधित बहुत उल्लेखनीय कार्य नहीं हुआ है। इनके भाव प्रदान गीत बरबस मन को आकर्षित कर लेते हैं। इतना ही नहीं, इनके गीत इतने भावुक होते हैं कि मन में एकदम झंझावत सा हो उठता है। इनके लोकगीतों में इनके सुख-दुःख, पतन, मिलन-विरह के भाव मिश्रित रहते हैं।

-राधेश्याम बि. शांडिल्य



जन्म गीत

शिशु के जन्म के बाद जब कोरकू युवक को यह विश्वास हो जाता है कि मैं पिता बन चुका हूँ, तब वह एकान्त पाकर पत्नि के पास आता है और बड़े ही मधुर ढंग से शिशु को लेने की इच्छा आँखों के संकेतों के माध्यम से व्यक्त करता है। तब पत्नि-पति का मंतव्य समझ जाती है और शिशु देने के पूर्व अपनी कुछ शर्तों को रखती है।

यही शर्तें इस लोकगीत में वर्णित है। गीत के भाव बहुत ही सुन्दर होते है, जिसमें कोरकू परिवार के गरीबी की झाँकी स्पष्ट होती है। निर्धनता के कारण गहनों का जुटा पाना तो संभव नहीं होता है, ऐसी स्थिति में वह गीत के माध्यम से अपने भाव प्रकट कर अपने मन में एक प्रकार का आत्म सन्तोष कर लेती है।

चोजडो रेगेली चोजमा रेगेली।
रेंगोली टूचखे जांबुनी डी ढोटा।
पली बुडुम डोक, लुतुरने रेंगेली।
बागोन्जा रेंगोली, बागोन्जा रेंगोली।
रेंगोली ईजखे, चोज या रेंगोली।

हे प्रिय! प्राणप्रिये! अपना शिशु मुझे दो। प्रिये! नहीं, पहले तो मुझे गले का हार दो। मुझे कंठी, फूल ला दो। मुझे अंगूठी ला दो। मुझे बाँह की बाजूबन्द दो, फिर मैं तुम्हें अपना शिशु दूँगी।

बावेना सयडो मलाय साजेना।
सनका लगा डोमी लाज टला,
जाम्बू इटा, लीवीजवा डो लोकोम्बा।
ढेगा जाटी ढूरी ओरोव, रूघुन-रूघुन जेटी माण्डो भुरूया।
गांवेन सिरी ढूरी को वण्डो पन्तरी कोरान।

गर्भवती महिला शिशु जन्म से पूर्व ही नवागत के बारे में अपने मन में सोचती है। वह कल्पना करती है- जब मेरी लड़की धीरे-धीरे बड़ी होगी, पाँव-पाँव चलेगी। एक दिन वह मेरे साथ पनघट पर जायेगी। वहाँ से वह दो छोटे-छोटे पत्थर लायेगी। फिर वह घर के सामने की धूल इकट्ठा कर हाथ चक्की चलाने जैसा कार्य करेगी, तो मैं बहुत खुश होऊँगी।

कोरकू भाषा में जन्म गीत को 'खाचा ऊमून या सोबनी सिरिंज' कहते हैं। कोरकू महिलाएँ शिशु-जन्म पर समवेत स्वरों में गीत गाती है।

बो डो बाई गिधड़ा उरागेन।
बो डो बाई गिधड़ा उरागेन।।
गिधड़ा उरागेन गिधड़ा जाम-बा।
बंझोटी उरागेन मीनू रावा।।
गिधड़ा उरागेन सोन्ना नी झूड़ी।
बंझोटी उरागेन लो नी झूड़ी।।

हे बहनों! शिशु वाले घर चलो अर्थात् जहाँ शिशु ने जन्म लिया है। हे सखियों! बच्चे वाली के यहाँ बच्चा रोता है और बाँझ के यहाँ बिल्ली। हे बहनों! बच्चे वाली के यहाँ सोने का झूला है और बाँझ के यहाँ लोहे का झूला।

ए रान्नी, ए रन्नी।
अमा कोनके म्यां घिड़ी, हुंजूगा नी हिले डो रान्नी रे।
ए बंझोटी, ए बंझोटी,
इयांकोनके म्या घिड़ी, हुंजूगा नी बांगोन डो बंझोटी रे।
हजार रुपिया हेवा रान्नी,
अमा कोनके म्यां घिड़ी, हुंजूगा नी हिले डो रान्नी रे।
अमा हजार रुपिया चुफरवा डो,
इयां कोनके म्या घिड़ी, हुंजूगा नी बांगोन डो बंझोटी रे।

हे बाई, हे बाई! तेरा सुन्दर सा बालक है। मुझे भी थोड़ी देर के लिए खिलाने दे। हे बाँझ बाई! हे बाँझ बाई! मेरा बच्चा मैं तुम्हें खिलाने के लिए नहीं दूँगी। हे बाई! तेरे बच्चे को थोड़ी देर ही मैं लूँगी, चाहे तो तू इसके बदले मुझसे हजार रुपये ले ले, लेकिन तेरे इस सुन्दर बालक को थोड़ी देर

के लिए मुझे खिलाने के लिए दे-दे। हे बाँझ बाई! मैं तेरे हजार रुपये का क्या करुँगी। मैं तुम्हें बच्चे को खिलाने के लिए नहीं दूँगी।

बोमा डो रेंगोली बोमा डो रेंगोली रेंगोली।
चिचोली हाटी बोमा डो रेंगोली।
इंजबाङोन रेंगेला, इंजबाङोन रेंगेला।
इयानी हीरा कुंवर केन जेमा सिरेन बाये डो रेंगोली।
बोमा डो रेंगोली, बोमा डो रेंगोली रेंगोली।
आमानी हीरा कुंवर केन आयोमा घिरिन बाये डो रेंगोली।
इंज बांगोन रेंगेला इंज बांगोन रेंगेला रेंगेला।
इयानी टाना गिधड़ाकेन बांगबाबय रेंगेला।

हे रेंगोली! चिचोली बाजार चल। हे रेंगेला! मैं तुम्हारे साथ बाजार नहीं चलूँगी। मेरे इस छोटे से बच्चे को कौन संभालेगा? हे रेंगोली! बच्चे को माँ के पास छोड़ दे, और मेरे साथ बाजार चल। हे रेंगेला! मैं अपने इस छोटे से बच्चे को माँ के पास नहीं दूँगी। अभी यह बहुत ही छोटा है।

ए सजनी डोये सजनी डी, मिंया घिड़ी आमा चान्हवे।।
हुजूने ज्वारा डी बाई, बांजो हरि डी डी।।

हे सहेली! हे बहिन! हे हमजोली! अपना शिशु कुछ देर के लिये मुझे दे दो, मन बहला लूँ। मैं एक शिशुहीन माँ हूँ।

जब संतानहीन शिशु की माता द्वारा शिशु की माँग की जाती है, तब शिशु की माँ भी अपना मन्तव्य प्रकट करते हुए कहती है कि तुम मुझे क्या दोगी? तुम भी ईश्वर से मनौती मानो। तुम्हारी इच्छा भी ईश्वर अवश्य ही पूर्ण करेंगे। वह तेरा दु:ख समझता है।

छठी पूजा

शिशु जन्म के के छठवें दिन कोरकू महिलाएँ छठी-पूजा (छटी देवी का पूजन) करती हैं। इस पूजन को 'उबल पूजा' या 'वर्तन पूजा' या 'दाई बिदाई' कहते हैं। इस दिन बहुत तड़के से ही दाई प्रत्येक घर के सामने एक राख का ढेर (गोला) बनाकर चली जाती है और पौ फटते ही जब कोरकू महिलाएँ राख का गोला देखती हैं, तो समझ जाती हैं कि आज छठी पूजन में सम्मिलित होना है। रात्रि में परिवार की स्त्रियाँ एकत्रित होकर गीत गाती हैं। जिसमें 'छठी देवी' या भाग्य रेख लिखने वाली देवी को आमंत्रित किया जाता है। जिसका भावार्थ होता है कि छठी देवी तुम अब इस घर में शीघ्र पधारो और शिशु का भाग्य लिखो। अगर तुम्हें किसी प्रकार की बाधाएँ आती हैं, तो हम जो रास्ता बता रहे हैं उस मार्ग से ही आ जाओ।

काटो किवड़ा शलम बिअेन।
घोड़की डो कुहजा बिअेन।।
हेज्जेन डो ट्राजे लाकेन।
सानी माय डो इंया माय।।
आदिरीखे अम लटेन।
डा नि बाही जरवज।।

ओ छटी माँ! तुम आ जाओ। अब शिशु संसार में आ गया, इसे तुम आर्शीवाद दे जाओ। शिशु बहुत कष्ट से आया। मुख्य दरवाजा खुला है। कोई दुविधा हो तो, छत-खपरैल की दरार से आकर शिशु का भाग्य लिखो।

प्रसव गीत

जब शिशु को किसी भी प्रकार की थोड़ी सी भी तकलीफ होती है, तो दाई को याद किया जाता है। जब दाई अपनी व्यस्तता के कारण आने में अपनी असमर्थता व्यक्त करती है, तब कोरकू परिवार का वयस्क पुरुष उसे अनेक प्रकार की मदद या इच्छित मांग को पूरा करने का आश्वासन देता है। यह आश्वासन सही मायने में होता है, क्योंकि कोरकू समुदाय में दाई का पद अत्यन्त ही सम्मानित होता है। चाहे वह बूढ़ा जवान किशोर हो, धनी-निर्धन हो, सभी लोग दाई को 'दाईमाई' 'जानेबा' कहकर पुकारते हैं। यहाँ जाति-पाति को कोई भेदभाव नहीं। दाई भी अपनी कर्त्तव्य निष्ठता में कोई कसर नहीं रखती। प्रसूतावस्था में तो वह एक क्षण भी स्त्री को नहीं छोड़ती। उसमें पूरी अपनत्वता का भाव उमड़ आता है।

बोन्डो सायनी वगेड़ा अमनी।
ईयी असलीखे निवटिये।।
ईजी बोगोन कोनकाजा।
ईयां मेडनी आंपड़ी बाखे।।

हे दाई! हे माँ दाई! तुम आओ। शिशु की तकलीफ दूर करो। हे पुत्र! हे भाई! मैं देख नहीं सकती। मैं आने में असमर्थ हूँ। हे दाई माँ! हे मधुर ह्रदय वाली माँ! मैं तुझे भुजा में बैठाकर लाऊँगा। मैं तुम्हारी चौकसी रखूँगा। मैं तुम्हें गेहूँ, ज्वार दूँगा। जो सोने-चाँदी जैसे चमकीले हैं।

बांझ गीत

डी सजनी, डोये सजनी।
अमी अपान डामा डी।।
डी सजनी डोये सजनी।
डी जुगे टाड़ई डी।।

डि घिड़ी आमा चान्हवें।
डि मूठवा डि गामज डी।।
डि लुकेन टारई हेजेबा।
डि सजनी डोये सजनी।।

हे संतानहीन बहिन! पहले कुछ भेंट रुपये, नारियल, प्रसाद स्वरूप होता है। इस भेंट का अर्थ होता है कि मैंने जिस परिश्रम से ईश्वर को माना है, ऐसा ही तू भी भेंट कर ईश्वर को मान। तेरी इच्छा भी पूर्ण होगी। फिर मैं तुम्हें अपना शिशु दूँ। उसे तुम लेकर जी बहलाना। तू भी ईश्वर से प्रार्थना कर, वह सबकी सुनता है। दूसरे के बच्चे का कब तक सुख। ईश्वर ने तुझे तो बाँझ ही बनाया। बाँझ को हर शिशु से बहुत लगाव होता है।

विवाह गीत

कोरकू युवक-युवतियों के विवाह संबंध का पहिला रिवाज सगाई है। सगाई का संबंध वैसे तो चिथोड़ा के माध्यम से होता है। चिथोड़ा द्वारा बात पक्की हो जाने पर ही सगाई का रिवाज (पक्का) पूर्ण हो जाता है।

सोकड़ा जोजोम्बा रे कोरो।
कोनटे जेबरा रे कोरो।।
कोनटे कोरा डोडोखे,
खिटीन कोरा हेज्जेन।।
इंया कोनटे लूलीऐन,
टुटी-मुट्टी कोनजेन।।
डोंगरेन कुरसी कुरसी।

घमनी ओटे साकोम।।
टोने पोवे डू जोड़ा,
जोड़ा जोड़ा पाव रे।।

हे लड़की के पिता! तू मेरा समधी बन जा। रोटी ले जा और बेटी दे जा। तेरी बेटी की राह देखते-देखते, मेरा लड़का खेत की मेढ़ पर आ गया है। तेरी लड़की भी तो खेत के रास्ते में आ गई है, अब तो तू समझ जा।

कोरकू बालक जब अपनी किशोरावस्था की दहलीज पर पाँव रखता है। तब कोरकू माता-पिता चिंतित हो जाते हैं और लड़के के लिए वधू की तलाश करते हैं। वधू की खोज का कार्य दोनों पक्ष के चिथोड़ों (मध्यस्थ) के माध्यम से ही होता है। वे ही कन्या के पिता से वधू मूल्य तय करते हैं। ऐसी स्थिति में लड़के की माँ अपने भाव चिथोड़ों के सामने प्रकट करती हुई कहती है कि मेरे लड़के के लिए तुम अच्छी सी वधू ढूँढ लो, तब कन्या पक्ष के चिथोड़े, वधू के लिए अच्छे से वर की माँग करते हैं। स्मरण रहे कि कोरकू मातृमूलक है। इसलिए वर पक्ष के चिथोड़े को कन्या के घर जाना होता है।

तना बिलती जा तना रागो।
तना बिलतीया बिला कुँवरा रे।
इंयाका तना के चोज मा सागे।
तना रागो तना बिलतीया।
बिला कुँवरा रे।
इंयाका तना के टोमी।
बा सागे, जा बा।

इंयाका तनाटेन चोजमा सागे जा।
तना रागो तना बिलतीयाँ, बिला कुँवरा रे।
इंयाका तनाटेन घोटिया सागे, तना बिलती जा तना रे।

हे चिथोड़े भाई ! हे चिथोड़े भाई ! मेरे लड़के के लिए तुम अच्छी वधू ढूढ़ँ लो। अच्छी वधू नहीं मिलने पर मेरा लड़का भले ही कुँवारा रहे। हे माँ! तेरे अच्छे लड़के के लिए, मेरी भी एक लड़की है। अच्छा वर न मिलने पर भले ही लड़की कुँवारी रहे। हे चिथोड़ों! अब तुम यह संबंध तय करा दो।

दहेज गीत

वधू मूल्य को प्रकट करने वाले इस गीत में लड़का अपने माता-पिता की तुलना भोले भण्डारी शंकर-पार्वती से करके अपने उद्‌गार प्रकट करता है।

इंया बा नी भोला मा जा।
इंया बारनी बोला मारे।।
इंया माय नी चतुर का जा।
इंया बारनी बोला मारे।।
इंया माय नी चतुर का जा।
लिजा ओरोव डोबा-सिडी समाकेरे।।
इंया माय नी चतुर का जा।
गोनोम सातिन सद्दी डामा समाकेरे।।
इंया माय नी चतुर का जा।
कोडो टूड़ी ओरोव समाकेरे।।

लड़का कहता है कि हमारे पिताजी महादेव जी जैसे भोले-भाले हैं और हमारी माताजी गौराजी जैसी होशियार व चतुर हैं। हमारे विवाह-शादी के दहेज के लिए एक सौ रुपये और कपड़े, बैल, बकरा व अनाज में कोदा व दाल, लड़की वालों को देने के लिए इकट्ठा कर लिया है।

हाजे सुबाङ हाजे डाई,
मोनोई पंच सुबाङ जा डाई, पेटेला जा दारोमेन।
भुमका नी कोन्जई जा डाई, कड़मा उरान बोलोएन।
कोन्जई जा गोनोमा पेखना जा डाई, पेटेला जा दारोमेन।
म्या हजार गोनोम टोलकेन, डुण्डा डोबा घटायेन।

हे भाई ! आओ, बैठो। पटेल के आँगन में पाँच-पंच मिलकर बैठो। भुमका की लड़की कड़मा के घर में घुस गई है। दहेज की चर्चा करना है। आओ भाई, बैठो। हे भाई ! दहेज में एक हजार रुपये और एक बैल देना निश्चित हुआ है।

देवता आमंत्रण गीत

विवाह के अवसर पर प्राय: ग्राम देवताओं को पूजने की प्रथा कोरकू जाति में प्रचलित है। इसी से संबंधित जो गीत गाया जाता है, उसमें ग्राम के देवताओं मुठवा बाबा, खनेरा देव, मरई माता, हरदूला बाबा, खट्टी देव, कीलार देव एवं भूत-प्रेत तथा पितृ देवताओं को आमंत्रित किया जाता है।

गाजो रे, गाजो रे,
गजरे बेड़ा गाँवेनके कागडो।
गाजो रे गाजो रे, मुठवा गोमज के कागडो।

टुड़ी व वन्जा डी, सागु टुड़ी बन्डो।
अल्ल व वन्जा, सागु टुडी बन्डो।
खेड़ा गोमजोखे कागडो, खनेरा गोमजोखे कागडो।
खट्टी गोमजोखे कागड़ो, हरदुला गोमजोखे कागडो।
मरई माय बीजासरी, किलार गोमजोखे कागडो।
भूटो पिटरकेन कागडो, गाजो रे गाजो रे।।

हे देवताओं! हमारे यहाँ विवाह उत्सव है। हम तुम्हें पाती भेज रहे हैं। मुठवा देव तुम्हे पहले पूजते हैं। मेरे लड़के का विवाह है। पूरे परिवार सहित आ जाना। हे खेड़ा देव! हे रक्षक! अब तुम भी आ जाना। हे खनेरा देव! उत्सव में पधारना। हे खट्टी देव! आप भी आमंत्रित हैं। हे हरदुला बाबा! मरई माता, बीजासनी माता, हे पितृ देवतागण! उत्सव की लाज रखना। तुम्हारे आने से विवाह उत्सव निर्विघ्न सम्पन्न होगा।

मण्डप गीत

हरो नीलो डोंगोरा रे कनिया, हरी नीलो डोंगोरा रे।
जाम्बू सिंज नी मावेन जा कनिया, बारा जो ढोनी बी।
ताम्बा मण्डवा उबायेन जा कनिया रे।
सोन्ना जाजोम बिडिले जा कनिया।
काका-आबा के कोंजकू रे कनिया।
चिलोमा नी तम्बाकू ओडे जा कनिया।
सब्बोकू तम्बाकू आनुए जा कनिया।

हे कनिया! हरे-भरे जंगल में जाकर जामुन-पत्ते और बल्लियाँ जलाओ।

ताम्बे का मण्डप बनाओ। मण्डप में सोने का जाजम बिछाओ। गाँव के काका-दादा को बुलाओ। हे कनिया! सभी को चिलम तम्बाकू पिलाओ। सभी लोगों का अच्छा स्वागत करो।

गोनसाला गोनसाला गोनासाला रे,
गोनसाला केण्डे गई, सेना सालि डो, चोको जोलोमे।
गोनसाला कुम्हारा उरागा दिवा सालि डो, दिवा लमटाये।
गोनसाला तेली उरागा, सुनुम सालि डो, दिवा लमटाये।
गोनसाला माड़ी उरागा, लिम्बू सालि डो, लिम्बू पूजाये।
गोनसाला किरीसाना उरागा चाउली सालि डो, चाउली पूजाये।

हे बहिन! आज देवी माँ का पूजन है। काली गाय का गोबर लाओ और मण्डप के आँगन को लीपो। हे सखी! कुम्हार के यहाँ से दीपक लाओ और तेली के यहाँ से तेल लाओ, मण्डप में दीपक जलाओ। हे बहिन! माली के यहाँ से नींबू लाओ, किरसाण के यहाँ से चावल लाओ। हे सखी! हे बहिनों! आओ हम सब मिलकर देवी-माँ का पूजन करें।

प्रात: मण्डप-छाजन के बाद, मण्डप आँगन को लीप-पोतकर उसे शुद्ध किया जाता है। संध्या समय कुल-देवी पूजन होता है, उसी अवसर पर यह देवी-गीत कोरकू युवतियाँ गाती है।

स्थान भेद के अनुसार इन गीतों को 'गोनलाला या गोमज पूजा सिरिन्ज' भी कहते हैं।

गंगा डो सोमदुरा टालान, बैनी के निवटा कूले।
हाजे डो बैनी डो लाजे डो बैनी, निवटा जेबाएन डो आम हांजे।

ऐ बैनी डो ए बैनी, सोमारा डिना डो बैनी,
इयानी ढोके कोनेन चसांग, अरकाए,
हाजे डो बैनी डो हाजे डो बैनी।
ए बैनी डो बैनी, बुधार डिना डो बैनी,
इञानी ढोके कोनेन लेगिना डाये,
हाजे डो बैनी डो हाजे डो बैनी।
ए डाई जा ए डाई।
इयांहाजे जा बांग, डाऊ।
इयांनी कोठा टालान, खूटो गई कोनकेन डाई,
इयांहाजे बांग डाऊ।

गंगा नदी और समुद्र किनारे के गाँव में मेरी बहिन रहती है। मेरी बहिन को विवाह-आमंत्रण भेजो। हे बहिन! आओ। सोमवार को मेरे बेटे को हल्दी लगेगी। हे बहिन! बुधवार के दिन लग्न लगेंगे। आओ बहिन आओ। हे भैया! मेरा आना नहीं होगा। मेरे यहाँ गाय ने एक सुन्दर से बछड़े को जन्म दिया है, इसलिए- हे भैया! विवाह में मेरा आना नहीं होगा।

दूल्हा को हल्दी लगाने के अवसर पर दूल्हा पक्ष की महिलाएँ यह आमंत्रण गीत गाती हैं। इन गीतों को 'सासाड' आरका सिरिंज कहते हैं।

आमा समोर दिवा जा बेटा,
आमा जीवेन जा चसाङ अरकाए।
चो जेलोमा ओयमी आयोम,
आमखे नी चो उम्मोरा जेलोमा इले रे।
उफून खूँटो जा उफून गोमेजा,

उफून खूँटो जा खाम्बो गाड़े।
कोन सानी डी माय डो,
खेड़ा-मुठवा के लिम्बू चसाङ डो आरागे मा रे।

हे बेटा! तुम्हारे सामने दीपक रखा है। बेटा! दीपक को हाथ जोड़ो अर्थात् नमन करो। हे बेटी! शरीर में हल्दी का उबटन लगाने दो। हे बेटी! तुम्हारी माँ बड़ी भाग्यवान है, जिसने तुम जैसे सपूत को जन्म दिया। हे बेटा! चारों दिशाओं में देवी-देवताओं के नाम पर चार खूंटें भी गाड़े हैं। हे दूल्हे की माँ! तुम नींबू-हल्दी से खेड़ा-मुठवा देव का पूजन करो।

सुबाङ सुबाङ डो राघो बेटी, बुलु पालकीन सुबाङ ए।
जेमा राजोन डो आयोम, बुलु पालकीन सुबाङ ए।
इञाका राजोन डो बेटी, बुलु पालकीन सुबाङ ऐ।
आमा आयोम बी इञका डो, आमा ऊ बी इञ का।
सुबाङ सुबाङ डो राघो बेटी, बुलु पालकीन सुबाङ ए।

हे बेटी! बैठो। हे लाड़ली बेटी! गोदी में बैठो। हे माँ! मैं किसकी गोद में बैठूँ? हे प्यारी बेटी! तुम मेरी गोद में बैठो। हे लाड़ली बेटी! मैं ही तुम्हारी माँ, पिता, भाई, भाभी सभी कुछ हूँ। हे प्यारी बेटी! तुम मेरी गोद में बैठो।

जेमा उरान आमा पावना डाके जा लाड़ा रे।
जेमा उरान आमा पावना डाके।
डाई उरान आमा पावना डाके जा लाड़ा रे।
डाई उरान आमा पावना डाके।
चोज मा आमा डाके जा लाड़ा।

चोज मा आमा डाके।
सीरा-सुआरी आमा पावना डाके जा लाड़ा रे।
सीरा-सुआरी आमा पावना डाके।

हे दूल्हे राजा! आज किसके यहाँ तुम्हारी मेहमानी हुई। आज भैया के घर मेहमानी हुई। हे दूल्हे राजा! ये मेहमानी कैसी हुयी? हलुआ-पूरी से मेरी मेहमानी हुयी।

विवाह के अवसर पर दूल्हे या दुल्हन को उनको रिश्तेदार भोजन के लिए आमंत्रित करते हैं, जिसे 'बाना जीमना' कहते हैं। बाना जीमते समय स्त्रियाँ इस सुमधुर गीत को गाती हैं। कोरकू भाषा में इन गीतों को 'बाना सिरिन्ज' कहते हैं।

चिविच् रान्नी डो चिविच् रान्नी।
चोजा सगुन घाले-बा डो चिविच् रान्नी।
चिविच् न्नी डो चिविच् रान्नी।
ब्यावा सगुन घाले-बा डो चिविच् रान्नी।

काली चिड़िया बोल रही है। काली चिड़िया कौन सा सगुन बोल रही है। काली चिड़िया बोल रही है। काली चिड़िया ब्याह का सगुन बोल रही है।

वर पक्ष द्वारा वधू के लिए वस्त्र देते हैं। वधू-पक्ष की स्त्रियाँ, वस्त्रों को लेकर मुठवा देव के चबूतरे पर जाती हैं। वहाँ यह गीत गाती हुयी वस्त्रों का और मुठवा देव का पूजन करती हैं। इस कार्यक्रम के पश्चात् घर वापिस आकर मण्डप में कुटुम्ब-पहिरावणी होती है। इस अवसर पर जो गीत गाये

जाते है, उन्हें 'लिजा ऐबरा सिरिन्ज' कहते हैं।

हारो नीलो मांडेवा जा डाई, दुवाला पगड़ी जा डाई टोल।
मावसी कू दारोमेन जा डाई, टूवाला पगड़ी जा डाई टोले।
जाम्बू कू दारोमेन जा डाई, टूवाला पगड़ी जा डाई टोले।
बैठे कू दारोमेन जा डाई, टूवाला पगड़ी जा डाई टोले।
हारो नीलो मांडेवा जा डाई, टूवाला पगड़ी जा डाई टोले।

हे भाई! हरे-भरे मण्डप में अंगोछा-पगड़ी बाँधो। हे भाई! मावसी के आँगन मे पगड़ी बाँधो। हे भाई! जाम्बू के आँगन में पगड़ी बाँधो। हे भाई! बैठे के आँगन में पगड़ी बाँधो।

इञाआबा नी भोला मा जा, इञाआबा नी भोला मा रे।
इञामाय नी चतुर का जा, इञामाय नी चतुर का रे।
इञाआबा नी भोला मा जा, इञा माय नी चतुर का रे।
इञाआबा नी भोला मा जा, लिजा ओरोव डोबा सिडी सामाके रे।
इञामाय नी चतुर का जा, कोड टुड़ी ओरोव सामाके रे।
इञा आबा नी भोला मा जा, गोनोम सातिन गेल सद्दी डामा सामाके रे।

कोरकुओं में वधू-मूल्य देने की प्रथा है। मण्डप में दहेज लोपान के अवसर पर कोरकू महिलाओं द्वारा यह दहेज गीत जिसे 'गोनोम सिरिंज' कहते है, गाया जाता है।

युवक कहता है-मेरे पिता महादेव जैसे भोले है। मेरी माँ पार्वती जैसी चतुर है। माता-पिता ने मेरे विवाह के लिए हजार रुपये, कपड़े बैल-बकरी व अनाज दहेज में देने के लिए इकट्ठा कर लिया है।

जब दहेज की वस्तुएँ यथावत वधू के पिता के पास भेज दी जाती है, तब मण्डप प्रथा प्रारंभ होती है। जिसमें वर को 'रावटी' से वधू के मण्डप की ओर ले जाया जाता है। इस अवसर पर गीत गाया जाता है। वर द्वारा वधू के मण्डप पर कटार फेंकने की प्रथा प्रचलित है।

डि नवरा माण्डवा, काठि सड़पेजा।
नवरी डि डाय, उरा डि डोय।।

दूल्हा मण्डप में जा रहा है। वह वहाँ कटार फेंकेंगा। दूल्हा-दुल्हन को लेने मण्डप घर में जा रहा है।

लग्न गीत

लग्न के अवसर पर वधू पक्ष द्वारा गीत गाया जाता है। उसमें वधू पक्ष, वर पक्ष से अपनी लड़की को अच्छी तरह रखने को कहता है।

चाउल, चाउल, चाउल डो।
चाउल लियेन ऊपर डिवा डो।
इंया टुड़ी, आमा टुड़ी, किमीन हाडैय आमा टुड़ी।
माणे माण चिमचा, डिवा कोरो वाले, डिवा कोरो वाले।
डी टुड़ी माणे माड़, डी टूड़ी जोमे बाबाजोम।
आनंडोटेन डाय्यूबा, आनंडोटेन हेय्यूबा।

चावल और चावल। चावल के ऊपर दीपक है। मेरी लाड़ली बेटी तेरी है, अब वह बहू बनने जा रही है। इसे चावल खिलाकर प्रसन्न रखना, सुखी रखना।

विदाई गीत

बारी पारेन निउरी गितिच्केन डो, आले नांगा भोगायेन।
आले निउरा डामा इके डो, आले नांगा भोगायेन।
आले निउरा ससा हेजकेन डो, आले नांगा भोगायेन।

इस विदाई गीत में बाराती वधू-गृह के द्वार पर वधू की प्रतीक्षा कर रहे हैं। विलम्ब होने पर वर-पक्ष की स्त्रियाँ कहती हैं-

दोपहर हो गयी है। क्या वधू घर में सो रही है? द्वार पर खड़े-खड़े हमारे पैर थक गए हैं। हमारे दूल्हे राजा ने दहेज का सभी रुपया-पैसा दे दिया है। हे वधू! तुम घर से बाहर निकलो। दूल्हे राजा तुम्हे लेने आये हैं।

ओलोडे ओलोडे ओलोडे कपार हुण्डाराटेन ओडे।
आमा नी निउरी कुंजकार डोडोबा,
बकी डो कपार हुण्डराटेन ओडे।
आमा नी बा-कुंजकार डोडोबा,
बकी डो कपार हुण्डाराटेन ओडे।

हे वधू! सिर पर घूंघट निकालकर, घर से बाहर आओ। तुम्हारे ससुर और जेठ तुम्हें देख रहे हैं। हे वधू! तुम घूँघट निकालकर घर से निकलो।

आमा माय डो आमा आबा के,
चोजा सोबा बाये डो, लाड़ली बेटी।
इञामाय डो इञाआबा के,
खड़िया सोबा बाये डो, लाड़ेली डो बेटी।

आमा डाई डो आमा ऊ के,
चोजा सोबाये डो बाये डो, लाड़ेली डो बेटी।
इञाडाई डो इञा ऊ के,
चसाङ सोबा बाये डो, लाड़ेली डो बेटी।

विवाह मण्डप के दिन दुल्हन घर की दीवारों और अनाज रखने की मिट्टी की कोठियों पर खड़िया मिट्टी और हल्दी से भित्ति अलंकरण 'गुदनी' बनाती है, उसी अवसर पर यह गीत गाया जाता है।

हे लाड़ली बेटी! तू ससुराल जा रही है। अपने माता-पिता के लिए क्या निशानी छोड़कर जा रही है? मैं माता-पिता के लिए खड़िया के निशान छोड़कर जा रही हूँ। हे लाड़ली बेटी! अपने भैया-भाभी के लिए क्या निशानी छोड़कर जा रही है। मैं अपने भैया-भाभी के लिए हल्दी के निशान छोड़कर जा रही हूँ।

आमा उरा सकड़ा आबा, इञाजीव नी खाडजेन।
लिजा ससागा भागा आबा, चुरगी ससागा भागायेन।
आमा दुसुमाना सेने आबा, आमा बैरी जा सेने।
आमा खिटी सकड़ा डाई, इञा जीव नी खाडजेन।
आटा जोजोमेन भागा डाई, कामाय चचरा भगायेन।
आमा दुसुमाना सेने डाई, आमा बैरी जा सेने।

कोरकू विदाई गीतों को 'बिबिदा सिरिन्ज' कहते हैं। ये विदाई गीत ऐसी रागों में ढले हैं कि जब इन गीतों को समवेत सस्वर गाया जाता है तो बरबस ही अश्रु-पात होने लगता है। पूरा वातावरण ही करुणामय हो जाता है।

इस हृदय स्पर्शी विदाई गीत में वधू अपने पिता व भाई से कहती है- हे पिताजी! शायद तुम्हारा घर छोटा पड़ गया है, मेरा शरीर बड़ा हो गया है। मेरे लिए चोली-साड़ी लाते-लाते तुम थक गए हो, इसलिए मुझे पराये घर भेज रहे हो। हे भैया! शायद तुम्हारा खेत छोटा पड़ गया है, मेरा शरीर बड़ा हो गया है, इसलिए मुझे पराये घर भेज रहे हो। खेत में कमाते-कमाते और मुझे खिलाते-पिलाते तुम थक गए हो। कोई बात नहीं भैया। तुम्हारी दुश्मन, तुम्हारी बैरी, हमेशा-हमेशा के लिए दूसरे के घर जा रही है।

मोउ कूवाकेन जा हीरा तारोब लुबाकेन।
हीरा आमेनी लाड़ेली बोको सेनेबा।
हीरा उरा खांलियेन।
कपार मुंडाए जामबा हीरा।
कपार मुंडाये जामे जा।
आमानी जा लाड़ेली बोको सेनेबा।
हीरा उरा खांलियेन।

हे हीरा! महुआ पकने वाले हैं, चिरोंजी भी पकने वाली है। हे हीरा! तुम्हारी लाड़ली बहिन ससुराल जा रही है। हे हीरा! माथा ठोक-ठोक कर रो। हे हीरा! तेरी प्यारी बहिन ससुराल जा रही है। हे हीरा! तुम्हारा घर सूना-सूना हो गया। महुआ और चिरोंजी अब कौन खायेगा?

ए रान्नी डो, ए रान्नी।
आमा आबा घाल्जा, टेंगेन डो रानी मा रे।
ए आबा जा, ए आबा जा।
म्या घिड़ी आलम बी जामकूबा जा आबा मा रे।

हाजे आबा, हाजे सुबाए।
इञखे नी थोड़ा सी माण्डी, घल्ली जा आबा मा रे।
ए रान्री डो ए रान्री।
म्या नी हजार गोनोम सावेन इञ चोफार टे मांडिए डो रानी मा रे।

हे बेटी! तुम्हारे लिए, तुम्हारे पिताजी आँगन में खड़े हैं। हे पिताजी! आओ, थोड़ी देर हम बाते कर लें। आओ बैठो। हे पिताजी! मुझे थोड़ी बात समझा दो। हे बेटी! मैंने तुम्हारी ससुराल वालों से एक हजार रुपये दहेज में ले लिए हैं। मैं अब तुम्हारे से किस मुँह से बात करूँ।

अम के नी गोनोम हुंजूतेन सामीञ डो,
कड़ी किरसाना कोनजेई।
इञनी गिरबो किरसाना कोनजेई डो,
इञ नी खुशीटेन बो बा।
अम के मुण्डो हुंजूतेन सामीञ डो,
कड़ी किरसाना कोनजेई।
आयोम माय राजी डो बा नी राजी डो,
इञ नी खुशीतेन बो बा।

हे किसान की बेटी! मैं तुझे गोली खेलते हुए अपने घर ले जाऊँगा। हे लड़के! मैं बड़े घर की लड़की हूँ, मैं तेरे साथ नही आऊँगी। हे किसान की बेटी! मैं तुम्हारे पिता को दहेज देकर तुम्हें ले जाऊँगा। हे किसान की बेटी! मैं दहेज में तुम्हारे पिता को बैल व अनाज दूँगा। हे लड़के! यदि तुम मेरे माता-पिता को दहेज दो, तो वे अवश्य ही राजी हो जायेंगे।

बो कोयल बो कोयल, आले देशोन बो डो।
आले देशोन बो कोयल, आले देशोन बो डो।
आपे देशो डोंगोरेन डो, आपे देशोन बाङोन।
आपे डोंगोरेन कूला कू बाना कू, आपे देशोन बाङोन।
कूला बाङ डो बाना बाङ डो आले, देशोन बो डो।
आयोमा हिरदा बाङ त्यागू बा हिरदा त्यागू, आपे देशोन बाङोन।
अम बी बकी हिगरा कोयल, आले देशोन बो डो।
बोमा जा पियु राजा, आपे देशोन बो जा।

हे कोयल! चलो तुम मेरे देश को चलो। हे प्रिय! तुम्हारा देश जंगलों-पहाड़ों से घिरा हुआ है। वहाँ जंगली जानवर शेर-भालू रहते हैं। इनसे मुझे बहुत डर लगता है। इसलिए मैं तुम्हारे देश नहीं चलूँगी। हे प्रिय! मेरे देश में न तो जंगल है और न ही शेर व भालू। तुम अवश्य ही मेरे देश चलो। हे पियु राजा! मुझसे मेरे माता-पिता का ख्याल नहीं छूटता। वे मुझसे बहुत प्रेम करते हैं। हे कोयल! तुम इन सभी बातों से मत घबराओ, तुम्हारे माता-पिता जैसा प्रेम, मेरे माता-पिता तुमसे करेंगे। हे पियु राजा! अब मैं तुम्हारे साथ अवश्य ही चलूँगी।

इ इंया माय डो या।
आपे गोडी सुना हाय।।
टटियों डोमाय डि डोया।
ए इंया डाई जोड़ा आपे।।
चपट टी टी डी य।
ए इंया फुफड़ो हाडि रे।।
नरी अटी माड़ी फुफटा।

ए इंया बोको जाई डो हा:।।

आलाम जोड़ी का टटिको।

ओ बाई डो आपे गोडी सुना हाय।।

ए इंया दादा हा आपे की।

चौपट रीरी चड़ाहि।।

ए इंया ककाडो, आपे उरा सुना डाये हा: हा:।।

हे मेरी माँ! अब मैं जा रही हूँ। हे माँ! तेरी गोदी सूनी हो गई। हे मेरे नाना! अब मैं जा रही, अब तू किसे अच्छी-अच्छी बातें कहेगा। ओ मेरे पिता! अब मैं जा रही, अब तू किसे बेटी कहेगा। ओ मेरे भाई! अब मैं जा रही, अब तू मुझे कैसे भूलेगा। हे मेरे फूफा! अब मैं जा रही, अब तू किसे महुवा फूल देगा। ओ मेरी अच्छी सी बहिन! अब हमारी जोड़ी टूट गई। ओ मेरे दादा! (ताऊ) अब मैं जा रही हूँ, अब तू किससे बातें करेगा और मैं किससे बात करुँगी।

जरा भाभी का शैला उतार दो

जरा भैया का शैला उतार दो

जरा मारेल बुबदार

लागी सारी रे सुखाय

हे ईश्वर! मेरे भैया भाभी सुखी रहें, वर्षों जियें। मेरे भैया का अंगोछा हटालो। मेरी भाभी का घूँघट खोल दो। भैया का अंगोछा कौन हटायेगा? भाभी का घूँघट कौन खोलेगा? भाभी! भैया का अंगोछा हटायें। भैया-भाभी का घूँघट हटायें। लो भाभी ने अंगोछा हटा दिया पर भैया घूँघट क्यों नहीं खोल रहे? हाँ, जरा भाभी को कण्डे की फफूंद लग जाये, जिससे उसका रंग

सुन्दर (गोरा) लगे। तब भैया भाभी का घूँघट खोले और भाभी भैया को देखे।

प्रणय गीत

इस गीत में वन के पर्यावरण से संबंधित प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन बड़े ही सजीव ढंग से किया गया है। कोरकू पुरुष अपने सिर पर और स्त्रियाँ अपने कानों में जामुन के पत्ते खोंसकर डोडबली, दशहरा, दीवाली, होली, पोला आदि त्यौहारों पर नाचते-गाते हैं। जामुन के पत्ते तोड़ते समय लड़के-लड़कियों का एक प्रेम गीत है-

जाम्बू पाला ईलीडो, खाड मानेली।।

गडा टालान खबाखुबू, मगरा मेटेन हिगराऐन।। 1।।

हप्पा-हप्पा, हप्पा-हप्पा, हुर्र र्र र्र र्र।।2।।

खिटी टालान खबाखुबू, मीनू मेटेन हिगराऐन।।3।।

डोंगर टालान खबाखुबू, कूला मेटेन हिगराऐन।।4।।

हऽ हऽ हऽ हऽ हऽ हऽ हऽ हऽ हु ई।।5।।

उसरी सुबांय खबाखुबू, स्याना मेटेन हिगराऐन।।6।।

बड़ा आदमी समझकर है। हे लड़की! तू मुझे जामुन का पत्ता दे दे। लड़की कहती है-ओ बड़ा आदमी! एक तरफ बड़ा पहाड़ है और दूसरी तरफ पहाड़ी नदी है। बीच में हमारा गाँव है, जब हम नदी में पानी भरने जाते हैं तो नदी की दह से बुद-बुद आवाज आती है, उसमें मगर रहता है, तो हमें मगर का डर रहता है, जब हम खेत में काम करने जाते है। हमारी झोपड़ी में झोली के अंदर सोये बच्चों को जंगली बिलाव का डर रहता है, जब हमारे पिता या पति जंगल में लकड़ी अथवा बाँस काटने जाते हैं, तो उन्हें शेर और

रीछ का डर रहता है, जब हम जवान लड़के-लड़कियाँ एकढाली में सोते हैं, तो हमें बड़े-बूढ़े आदमियों का डर रहता है। इन सब डरों को सहते हुए हम कहाँ जायें? इसीलिये जंगल का जीवन ही सबसे श्रेष्ठ है।

कोरकुओं की हर प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति वनों से होती है। इसी कारण वन्य जीवन का वर्णन इनके गीतों में मिलता है।

ऊँचा-मूचा, ढोकेकीन्जा, ऊँजा-मूचा ढोकेकीन्ज।
साल्या वालान्जा, ढोके ढई ममा बो ।।
मिंया डामा, चुरगी साले, लड़पे-बुचू डुगूबा जा।
साल्या वलान्जा, ढोके ढई ममा बो।। 1।।
बारी डामा, खाण्डा साले, चोपटे-ढोपोर डुगूबा जा।
साल्या वलान्जा ढोके ढई ममा बो।। 2।।
ढई टखड़ा लाम्बा सोटा, ढई टाखड़ा लम्बारी जो।
साल्या वलान्जा, ढोके ढई ममा बो।। 3।।
टाखड़ा गेगेज जा ढोके, इन बांगोन जो।
साल्या वलान्जा, ढोके ढई ममा बो।। 4।।

ऊँचे पूरे, हट्टे-कट्टे बराबरी के दो जवान कोरकू लड़के बैलगाड़ी की ढई (स्टेण्ड) काटने के लिए सालई वृक्ष के जंगल से गये। साथ में एक पैसे की चोली और दो पैसे का एक लुगड़ा (साड़ी) मोल लेकर जंगल में पहुँचे।

जंगल में एक नदी थी और उस नदी में कुँवारी लड़कियाँ स्नान कर रही थी। ये दोनों कुँवारे लड़के उनके पास पहुँचे और अपनी-अपनी मन चाही लड़की को क्रमशः एक ने चोली व दूसरे ने साड़ी पहिनने को दी।

पहली लड़की ने चोली पहनी तो उस चोली से आधा स्तन ढंका और आधा बाहर दिखने लगा। कहने लगी- चोली छोटी पड़ गई। फिर दूसरी लड़की ने लुगड़ा शरीर में पहना तो उसमें से शरीर का पिछला भाग दोनों पुट्ठे दिखने लगे। तब वह कहने लगी कि लुगड़ा बहुत छोटा है। फिर दोनों ने चोली एवं लुगड़ा प्रेम पूर्वक रख लिया और हास-विलास करती हुई अपने घर चली गई।

इधर जंगल में एक साथी ने सालई के पेड़ की एक डाली ढई के लिए काटी। परन्तु उस डाली का एक सिरा लम्बा था और दूसरा सिरा छोटा था। दूसरे साथी ने जो नीचे था मना किया और कहने लगा कि भाई ढई के लिये दोनों सिरे बराबर होना चाहिये। फिर दूसरी लकड़ी जिसके दोनों सिरे बराबर थे, ढई (स्टेण्ड) के लिए काटी और उसे लेकर प्रेम-पूर्वक घर आ गये।

वन्य जीवन से संबंधित प्रत्येक प्राकृतिक वातावरण इनकी रगों में भरा पड़ा है।

वाल्ला या डूण्डा, फिफरी फिफरी, रेफे-रेफे माण्डी वा जा।
भुरूयाँ रइनी, जम्बू, रे रसी सई।। टेक।।
रे रसी, सईडो बावोन, हाजे आलो, माण्डीवा डो मुरुँयाँ।। 1।।
रे रसी सईडो बावोन, कोरो कम्बड़ा, बिलेवा डो भुरुँयाँ।। 2।।
रे रसी सईडो बावोन, सोलरे लोतरे, माण्डीवा भुरँयाँ।। 3।।

ऊँची पहाड़ी पर एक डून्डा फिफर का झाड़ है, उसकी पत्ती हवा चलने पर खड़-खड़ आवाज करती है। नदी किनारे मैदान में जो जामुन का झाड़ है। उसकी गहरी छाया में बिस्तर बिछाकर वहाँ अपनी प्रेमिका को बुलाता है। बिछौने पर पेड़ की गहरी छाँह में दोनों प्रेम भरी बातें करते हैं।

प्रेमी-प्रेमिका के हँसी-मजाक का सुखद विवेचन इस कोरकू गीत में मिलता है। गूलर पकने के बहाने प्रेमिका से बात करने की इच्छा प्रेमी द्वारा की जाती है। जब प्रेमिका को विश्वास नहीं होता तो अपनी सखी सहेली से वस्तुस्थिति का पता लगवाती है। सही स्थिति ज्ञान होने पर वह प्रेमी की मनः स्थिति जान लेती है और मनोविनोद स्वरूप कहती है-

लबाड़ मान्डी, लबाड़ मखान; ठोसके नाकीकेन, नाकी सेन
कोम्बराज डो, गाडजा पाटी; घोंघरे लावा बीलीकेन।
लाब लाबे लाबे टारई; गुयूर गुयूर जाटीऐन।

लड़की धीरे-धीरे चक्की चला रही है, तब एक प्रेमी लड़का कहता है कि- नदी के किनारे पर एक गूलर के झाड़ की सब गूलर पक गई है। तब लड़की कहती है कि तू बहुत झूठा है, मैंने अभी-अभी ठोसके से पूछा है, अभी गूलर अधपकी है, तुम्हारा भाव मैं समझ गई।

प्रेमी-प्रेमिका का मधुर प्रेम सरस रहे, उससे संबंधित एक गीत है, इसमें प्रेमिका हंस और सारस के जोड़े का उदाहरण देकर कहती है कि- हे प्रेमी! जब भी हमारे बीच में आपसी मनमुटाव हो जावें तब तुम मुझे मना लेना। इससे हमारा और तुम्हारा प्रेम सीरी-फराद, लैला-मजनू, हीर-रांझा जैसा अमर रहेगा।

वल्ला लेन डो धनास कुँवर, भुरुनेन डो सारेली।।
सारेली केन चोज मा सागे, सारेली डो, रे रांगी।।1।।
सारेली केन चुरगी मा सागे, सारेली डो, रे रांगी।।2।।
सारेली केन कड़ीया मा सागे, सारेली डो रे रांगी।।3।।

पहाड़ पर एक सारस का जोड़ा प्रेम पूर्वक रहता था, एक दिन दोनों में

लड़ाई हो गई। नर सारस नाराज होकर पहाड़ की चोटी पर और मादा सारस नीचे जमीन पर रहने लगे। कुछ समय पश्चात् नर सारस मादा सारस के पास गया और आग्रहपूर्वक कहने लगा कि मैं तेरे लिए कौन सी वस्तु-लाऊँ। फिर भी मादा सारस मौन ही रही।

तब बेचारा नर सारस बाजार गया और वहाँ से मादा सारस के पहिनने के लिये एक चोली और पाँव में पहिनने के लिये काँसे की कड़ी लाया और अपनी प्यारी मादा सारस को दी। तब जाकर मादा सारस प्रसन्न हुई और फिर दोनों प्रेमी-प्रेमिका एक साथ प्रेम पूर्वक रहने लगे।

फागुन का माह कोरकुओं के लिये बड़ा ही उत्साह लिये हुए आता है। रंग-गुलाल, गीत, नृत्य, ढोल-ढोलक की ध्वनि से पूरा वातावरण जब भींग सा जाता है, तब प्रेमिका भी अपने प्रेमी पर रंग डाले बिना कैसे रहे। वह कनखियों से प्रेमी को अपने पास बुलाकर रंग डाल देती है। यह दृश्य जब प्रेमिका की सखी देख लेती है, तो वह उससे पूछती है कि अब परिणय बंधन में कब बंध रही हो। यही मनोरम संवाद इस गीत में वर्णित है।

रेगोंव डाले राई सोमा रे रजा।
लवन्डोके मसेदरी गलोया मे रजा।।
रेगोंव डाले राई कोमा ले रजा।
ऊंगान बो जा रे लवंडा धारनी बाजार।।
धारनी दूकान लवन्डा धारनी दुकान।
धारनी दूकान लवन्डा साड़ी निवाड़।।
साड़ी निवाड़ लवन्डा डामा जेवाड़।
आग मअ जा रे लवन्डा पुलुम कासाकू।।

हे सखी। तूने अपने प्रेमी पर रंग डाला। अब उसके दिल पर रंग कब डालेगी। रंग डालने पर जब इतना सुन्दर लगता है तो विवाह के रंग से तो वह अति सुन्दर लगेगा ही। हे सखी! विवाह के बाद तुम कहाँ जाओगी? क्या धारनी बाजार जाओगी। अपने पति से घोड़ा सजवाना। उस पर तुम दोनों बैठकर जाना। उस बाजार में साड़ियाँ खरीदवाना। उनके पैसे भी प्रिय से दिलवाना। जब वे कुछ आना-कानी करें तो कहना, मैं तुम्हारी पत्नि बन गई। जब दो हम उम्र सहेलियाँ खेत-खलिहान, घर-आँगन, नदी-पोखर में एकान्त पाकर मिलती हैं, तब वे अपने मन की व्यथा व्यक्त करते हुए अपने-अपने प्रेमी के बारे में पूछती हैं।

इंगान बोवा, डिगांन बोवा, चपड़ान नीड़ेन।
टारई-पोटक्कू बारिक्कू केन, मिमिलाटेन।।
गाडा टालान डा साले, माण्डी माण्डीबा, राजी-बाजी आले।

हे सखी! अपने प्रेमी से मिलने हेतु इधर चलें या उधर चलें, कहीं तो भी भाग चलें। दोनों कहीं न कहीं मिल अवश्य जायेंगे। हे सखी! नहीं तो नदी पर पानी भरने के बहाने ही चले, वहाँ पर अपने-अपने प्रेमियों से प्रीत भरी बातें भी हो जायेंगी और एक दूसरे से प्रणय संबंध भी हो जायेंगे।

युवक-युवती का जब प्रेम अपने अंतिम चरण में पहुँचने लगता है, तब प्रेमिका प्रेमी पर अपना अधिकार जतलाती है और बाजार चलने का आग्रह करती है। इतना ही नहीं, बाजार में बिकने वाली श्रृँगार सामग्री को ला देने की हठ भी करती है। प्रेमी-प्रेमिका का यह परस्पर वार्तालाप इस गीत में कहा गया है-

याना गाना हाटी काडो।
आईना गईना हाटीम रे।।

याना गाना हाटी टाला।
सोनार डुकान हाजेमा रे।।
बोम जो बन्सी डोके।
बसिका जोड़ी डो मौलाए।।
इयानी पेटा डामा का।
खाड़ चौफार टेमा कौलाए।।
डामा पिकर माण्डी वण्डो।
जाड़ पिकर नाक रे।।

आयना गायना एक गाँव है। वहाँ बड़ा बाजार लगता है। उस बाजार में सुनार की दूकान है। प्रिये! वहाँ से बिछिया खरीद देना। हे प्रिये! मेरी लंगोट (जेब या पगड़ी के छोर में बंधी छोटी गठान) में तो रुपये नहीं है। कैसे बाजार चलें। हे प्रेमी! मैं तुम्हारी पत्नि नहीं बनती। तेरी संगत से क्या लाभ? गहने पहिनाना तो तेरा कर्तव्य है। अरे! तुम तो रूठ गये। अब दिल का गहना ही पहना दो। चलो, कुछ क्षण हम बात कर लें।

इस गीत में ऐसे दो प्रेमियों की बातचीत का वर्णन है, जब वे प्रथम बार ही अनजान जगह पर एकाएक मिल जाते। और बातचीत करते हैं। इनके मिलन में ही जो हँसी-मजाक का वार्तालाप होता है, उसका सजीव चित्रण इस गीत में मिलता है।

कंचली टारई, कंचली टारई।
कंचली टारई, गुरुवानी।।
इनी कोराटेन जे माँ।
माण्डी कंचली टारई गुरुवानी।।

इनी कोराटेन साना ओल्लेन।

कंचली साना टावनी।।

सानी लगाव कंचली।

कंचली टारई गुरुवानी।।

टारई टावनी टारया लगाव कंचली।

टारया टावनी टारई लगाव कंचली।।

इंयानी टाय हे अजेनी, उरा जफाय कंचली।

इंयानी जफाय अरुमा, कंचली टारई कंचली।।

कंचली टारई गुरुवानी।।

हे लड़की! तू कंचन जैसी सुनहरी देहवाली है। हे लड़की! तू गुरु के समान मार्गदर्शिका है। यदि तू सच्ची है तो, इस पथ का रास्ता बता। बता मेरे आने के पूर्व कौन-कौन इस पथ से गुजरे? हे पथिक! ध्यानपूर्वक सुन। तेरे आने से पहिले ही एक बूढ़ा इस राह पर गया। अब तू भी उसके पीछे बूढ़ा बनकर चला जा।

हे कंचनयुक्त लड़की! मैं तो लड़का हूँ और तू लड़की है। तेरी इच्छा हो तो, मैं आगे-आगे चलता हूँ। तू पीछे-पीछे आ जाना। हम तुम प्रेम-पाश में बंधकर एक दूजे के होकर पति-पत्नि बन जायें।

दीपावली के बाद जो कोरकू क्षेत्र में हाट (बाजार) लगता है। वह 'ठाठिया-हाट' के नाम से प्रसिद्ध है। ठाठिया चरवाहे का नाम होता है, जो गोण्ड, निहाल (नहाल) या अन्य जाति का होता है। दीपावली पर ठाठिया का परम्परागत ढंग से सम्मान किया जाता है। ठाठिया की वेश-भूषा भी अन्य दिनों की तुलना में इस दिन विशेष आकर्षण युक्त होती है। गले में

घास के बीजों की मालाएँ, सिर पर मोरपंख और भुजाओं में लटकती कौड़ी युक्त मालाएँ होती हैं तो होठों पर बाँसुरी। प्रत्येक कोरकू गृहणी ठाठिया की पूजा विधिवत करती और नेग स्वरूप अनाज देती है। अंतिम दिन सभी ग्रामों के ठाठिया बाजे-गाजे के साथ लदे-फंदे हाट पहुँचते हैं। इन्हें देखने के लिए भीड़ उमड़ पड़ती है। भीड़ में प्रेमी-प्रेमिका नयनों के संकेत से भाग निकलते हैं। कुछ दिनों तक वे किसी परिचित, रिश्तेदार के यहाँ रहते हैं। इसके पश्चात् उनकी खोज दोनों पक्ष से होती है, मिलने पर वधू के पिता को जाति पंचायत द्वारा तय की गई दहेज (गोनोम) राशि दी जाती है और प्रेमी-प्रेमिका विवाह सूत्र में बंध जाते हैं। इसी से संबंधित प्रेमिका का आह्वान निम्नलिखित गीत में स्पष्ट होता है-

मान्डी रे राम लखन डाई चावड़ीकेन।

मान्डी रे राम लखन डाई मिमिलाटेन।।

खुर्द गिली झेण्डा पोपा लला डोकी।

मान्डी रे लखन डाई चावड़ीकेन।।

हरसूद राजा झेण्डा, पोपा लला टियेबा।

माण्डी रे लखन डाई मिमिलाटेन।।

हे प्रेमी! ग्राम के लड़कों ने यहाँ का झण्डा गाड़ दिया। परन्तु हरसूद के राजा ने वह गड़ा झण्डा उखाड़ दिया। रानी को भी साथ ले गया। हे प्रेमी! क्या तुममें भी वह साहस है? क्या तुम भी ठाठिया हाट में, मुझे ले जा सकते हो?

वैसे तो कोरकू रावण और मेघनाथ पूजक है, परन्तु यहाँ राम-लखन का अर्थ ग्राम के युवकों से हैं।

प्रेमी जब प्रेमिका के द्वार पर आता है, तो वह अत्यन्त ही प्रसन्न हो

उठती है। उसके स्वागतार्थ अनेक प्रकार की तैयारियाँ करती है। प्रेमी के स्वागत में कोई कमी न होने पाये। यही भाव वह अपनी सहेली से इस लोकगीत के माध्यम से व्यक्त करती है–

लंकन टे हाडैय चिनायेनबा।
रे हित्तू कोरो खे।।
आले हाडैय जागड़ी कोरो।
हित्तूको बीजड़ो।।
लंकन टे हाडैय चिनायेनबा।
रे हित्तू कोरो खे।।
एटा उने उने साकोम।
कोरो कम्बड़ा टोने डोकीबा।।
लंकन टे हाडैय चिनायेनबा।
रे हित्तू कोरो खे।।
कुठीए बाबा हुण्डारे जुजुम्बा डि।
हरि मूंगा डि दाढ़ी जोजोम्बा।।
जोजोमा बान लाज रांगेनजन।
बुढीयेन डा साले नुनुबा।।
पुड़ी थका बाजे सिडी।
गोचखे सब्बो मना रे।।
कोम्बा टिटुर एटा सिडी।
जीलू जोजोमा चिपचिप।।
लंकन टे हाडैय चिनाये।
हित्तू कोरोखे।।

देख सखी! कोई दूर से आ रहा है। वह मेरा प्रेमी है या अतिथि। हे सखी! तू उसे पहिचान। अरे! यह तो तेरा प्रेमी है। उसे कम्बल पर बैठा दो जाजम गुदड़ी बिछा दो, उसे पान का बीड़ा दो, उसे चावल खिलाओ, दाल तो नहीं है, उसे मिरची नमक दो, उसे झील का ठण्डा पानी पिलाओ। पूड़ी के तलने की छन–छन आवाज आ रही है। देखो, उनका मन पसंद भोजन बन गया। इतना स्वादिष्ट भोजन न करे तो उसकी किस्मत। क्या उसने उपवास रखा है? सखी, पूछ तो वे क्या खायेंगे? मुर्गा, तीतर या बकरा। सखी, बालम रूठ गए हैं, अब उन्हें मना लो।

अपना देश, अपना गाँव सभी को प्यारा लगता है। प्रेमिका अपने गाँव की बड़ाई का वर्णन करती हुए प्रेमी से कहती है कि प्राकृतिक दृश्यों से मेरा गाँव भरपूर है। विन्ध्य–सतपुड़ा पर्वत की सुगंधित वायु यहाँ विद्यमान है। पराग युक्त कणों से युक्त पोधों पर भौंरा, तितली, मधुमक्खी गूँज रही है, सुन्दर लालिमा छाई है और रोशा घास की सुगंधित वायु सभी को आनंदित कर रही है।

आमसू आन्धारी, पूनिया चण्डनी।
बोको के आंगुली बोझा।।
आके सावरेन डो, कसा सवारेन डो।
बोको खे आंगोलिजा बांगो।।
बो बांगोन इंया डाई इंज ढोटा।
ढोटा आम माय डो डोबा कारया।।
कंकरा नोरोबा नोरोबा रे।
आमसू आन्धारी, पुनिया चडनी।।

पत्नि बनने की सुखद कल्पना का समावेश इस गीत में किया गया है।

अमावस्या और पूर्णिमा की रातें वे दोनों सगी बहिनें हैं। हे सखी! तू ही बता, हम किस रात में नहावें। अमावस्या में प्रेमी का डर है। पूर्णिमा में लोगों का डर है। हाँ, नहाना तो जरुरी है। नहाते समय यदि तेरी माँ देख ले, तो वह मेरी सास लगेगी। यदि तेरे पिता देख लें, तो वे मेरे ससुर होंगे। पर यदि तेरा भाई देख ले, तो बता वह मेरा क्या लगेगा?

करोली कारो जाम्बोली, कारोली कारो जाम्बोली।
हाटी कोरान माण्डी पोल्यारेन, कारोली कारो जाम्बोली।
सागा घाटो सागा पोल्यारेन, कारोली कारो जाम्बोली।
दिवाड़ी मइना गेंदा फुलुवा, कारोली कारो जाम्बोली।
फागुन मइना केसा फुलुवा, कारोली कारो जाम्बोली।

हाट-बाजार के पहाड़ी रास्ते में युवती से कोरकू युवक कहता है-हे सुन्दरी! देखो, जामुन पक गई है, वृक्ष झुक गया है। देखो, जंगल का लम्बी-लम्बी घास भी झुक गई है। आओ, हम भी झुक जाएँ अर्थात् एक-दूसरे के हो जाएँ। हे गोरी! दीवाली के अवसर पर गेंदा फूलता है। फागुन में होली के अवसर पर पलाश का फूल भी केशरिया रंग से सुशोभित होता है। आओ सुन्दरी, हम भी प्रेम रंग में रंग जाएँ।

लावा बीली-बीली टारई, गुयुर गुयुर जाटीएन।
ए टारई गाड़ा जा पाटा घोंघरे लावा बीलीकेन।
लबाड़ माण्डी लबाड़ मखान, ठोसके नी कोमारेनेज।
बोर रयनी बीली टारई, गुयुर-गुयुर जाटीएन।
ए टारई गाड़ा जा पाटा, बोर रयनी बीलीकेन।
लबाड़ माण्डी लबाड़ मखान, सोमाय नी कोमारेनेज।

युवती धीरे-धीरे हाथ-चक्की चला रही है, उससे युवक कहता है-हे प्रिये! गूलर पक गई है। नदी किनारे की गूलर पक गई है। आओ, हम दोनों गूलर खाने चलें। प्रेमिका कहती है-तू बहुत झूठा है, मैंने अभी-अभी ठोसके से पूछा है। हे प्रिये! नदी किनारे बेर और रयनी भी पकी है। आओ, हम बैर रयनी खाने चलें। तू बहुत झूठा है, मुझे सोमाय ने सब कुछ बता दिया है।

बल्ला या डूंडा फिफरी रेफे रेफे माण्डीबा जा,
भुरुयाँ रयनी जाम्बू रे रसी साई।
रे रसी साई डो बाङोग, हाजे आलोम माण्डीबा डो
भुरुयाँ रयनी जाम्बू रे रसी साई।
इञ बाङोन जा ढोके, इञानी आबा डोडोबा जा,
भुरुयाँ रयनी जाम्बू रे रसी साई।
आमानी आबा डोडो मखान,
उखू-उखू हाजे मा डो,
भरुयाँ रयनी जाम्बू रे रसी साई।
इञ बाङोन जा ढोके, इञानी आयोम डोडोबा जा,
भुरुयाँ रयनी जाम्बू रे रसी साई।
आमानी आयोम डोडो मखान,
होम्बा-होम्बा हाजे मा डो,
भुरुयाँ रयनी जाम्बू रे रसी साई।

प्रेमी, प्रेमिका से कहता है-हे प्रिय! पहाड़ के ऊपर जहाँ फीफर का वृक्ष है। उसी के पास जामुन वृक्ष की गहरी छाँव है। वहाँ तुम आना। हम प्रेम भरी बाते करेंगे। हे प्रियतम! मैं नहीं आऊँगी। यदि मेरे पिताजी ने देख लिया

तो क्या होगा? हे प्रिय! तुम छिप-छिप कर आ जाना। हे प्रियतम! यदि माँ ने देख लिया तो क्या होगा? हे प्रिय! तुम झुक-झुक कर आ जाना।

बल्ला काबा डो जा आबा, बल्ला काबा डो।
आमानी बुरा डाये जा आबा, केण्डे ढोटा इकेनिज।
बल्ला काबा डो जा आबा, बल्ला काबा डो।
आमानी बुरा डाये डो आयोम, लंगड़ा ढोटा इकेनिज।
बल्ला काबा डो जा आबा, बल्ला काबा डो।

इस गीत में विवाहित युवती अपने माता-पिता से कहती है-हे पिताजी! पहाड़ में मुझे बहुत काम करना पड़ता है। मेरा विवाह काले आदमी से क्यों कर दिया। हे माँ! जंगल में मुझे थोड़ा भी आराम नहीं है। मेरा विवाह लंगड़े आदमी से क्यों कर दिया?

मोर मोरांगी जा डाडा झल्जा मोरांगी झल्जा मोरांगी।
टोने मा सोटाटेन म्हारा चलकेन जा, झल्जा मोरांगी।
टेमलागाँवा सोटाटेन म्हारा चलकेन जा, झल्जा मोरांगी।
शोभापुर सोटाटेन म्हारा चलकेन जा, झल्जा मोरांगी।

हे भाई! मोर जा रहा है। कलंगी वाला मोर जा रहा है। हे भाई! मोर किधर से जा रहा है? हे भाई! मोर टेमलाबाड़ी गाँव के पास से जा रहा है। हे भाई! मोर किधर से जा रहा है? हे भाई! कलंगी वाला मोर शोभापुर गाँव के पास से जा रहा है।

आमानी गाड़ा डोबाकूकेन टेंगेन मा जा।
इञानी गाड़ा डोबाकू बाङ टेंगेन डो।

सेन्दराय सेन्दराय इञ नांगा कासू लक्केन जा।
आमानी जाटो मारोजी इञानी धाले हो।
इञानी जाटो मारोजी बिरामन टारई जा।
आमानी जाटो मारोजी इञखेन घाले जा।
इञानी जाटो मारोजी रईदाती टार्‌या डो।
आलोमा नी जेनोम जूड़ी बाङ डाऊ डो।

युवती, युवक से कहती है-हे युवक! तुम गाड़ी रोक दो। हे युवती! मेरी गाड़ी मैं नहीं रोकूँगा। हे लड़के! चलते-चलते मेरे पैर थक गए हैं, तुम गाड़ी रोक दो। हे लड़की! पहिले तुम अपनी जाति बताओ? मैं ब्राह्मण की लड़की हूँ। हे लड़के! तुम्हारी जाति क्या है? मेरी जाति ब्राह्मण नहीं है। हे लड़के! हम जीवन-साथी नहीं बन सकते हैं।

इंया माय डो, इंया माय डो, उरगा टालान।
इंया रान्नी, इंया जफाय, बान डुगू।। 1।।
ए बोको जा, ए बोको, अमानी रान्नी।
घुड़गी गोठानेज जा, लूड़ीज मुंडाये।। 2।।
ए रान्नी डो, ए रान्नी, चोजा सन्टी।
घुड़गी गोठानेज जा लूड़ीज मुन्डाये।। 3।।
ए राज्जा रे, ए राज्जा, उरगा टालान।
सानी बोको डो, सानी बोको, बान डुगू।। 4।।
ए रान्नी डो, ए रान्नी, सानी बोको।
उरगा टालान खीजो मुन्डाये।। 5।।
ए बोको जा, ए बोको, चुचु टंग्या।

टाखूज मलार, लेसेर लेसेर मुण्डाये।। 6।।

ए बोको जा, ए बोको।

घीड़ीकेन कम्बड़ा घाटाय मारेन।। 7।।

ए बोको जा, ए बोको।

सरसली डोंगरेन बोझाये।। 8।।

ए बोको जा, ए बोको।

सिपना ईटान परचा आरुए।। 9।।

ओ माय, ओ माय! मेरी रानी (पत्नि) घर में दिखती नहीं है। अरे बेटा, ओ बेटा! तेरी रानी गुस्सा होकर घोड़े की घुड़साल में लोट रही है। लड़का घोड़े की घुड़साल में पहुँचकर अपनी प्यारी रानी से पूछता है कि- ए रानी! तुझे गुस्सा क्यों आया? तब रानी (पत्नि) कहती है कि मेरा देवर घर में नहीं दिखता है। वह फिर घर पहुँचा। बहू से पूछने लगा कि छोटा भाई कहाँ गया? बहू बोली कि-तुम्हारा छोटा भाई गुस्सा होकर कहीं भाग गया।

थोड़ी देर बाद देवर और भाभी आपस में मिल जाते हैं, तब भाभी ने देवर से कहा कि- हे देवर! कुल्हाड़ी निशान पत्थर पर निशानो। घड़ी की हुई कम्बल भी ढूँढ़कर ले आओ और दोनों को कन्धे पर रखकर सरसाली जंगल में चलो। सागौन के पेड़ के नीचे शिकार करने का मण्डप बनाओ फिर हम दोनों शिकार करेंगे।

एक प्रेमी, अपनी प्रेमिका से कहता है कि देखो न कार्तिक माह में दिवाली के अवसर पर गेंदा भी फूल आता है और फागुन माह में होली के अवसर पर बसन्ती बहार लिये हुए खाखरे (पलाश) का फूल भी अपना लाल रंग से (केसरिया रंग से) सुशोभित हो जाता है, तो फिर हम दोनों भी ऐसे अवसर पर प्रणय बंधन में क्यों न बंधे?

कारोली करो जाम्बोली, कारोली कारो जाम्बोली ।। टेक।।

खिटी कोरान पावी पोल्यारेन, कारोली कारो जाम्बोली।। 1।।

खिटी कोरान पावी पोल्यारेन, कारोली कारो जाम्बोली।। 2।।

सगा घाटा सगा पोल्यारेन, कारोली कारो जाम्बोली।। 3।।

दिवाड़ी मेन्हान गेंदा फुलुवा, कारोली कारो जाम्बोली।। 4।।

फाग्गुन मेन्हान केसा फुलुवा, कारोली कारो जाम्बोली।। 5।।

अईटेन बारियाकू राजी-बाजीबा, कारोली कारो जाम्बोली।। 6।।

इंगान उंगान चपड़ान निड़ेन, कारोली कारो जाम्बोली।। 7।।

बरसात में जब घनघोर काले-काले बादल आसमान में छाये रहते हैं, तब भी पहाड़ के कोरकू लोग दूर-दूर के गाँव से बाजार करने जाते हैं। बाजार जाते समय रास्ते में दो कुँवारे लड़के-लड़की का मिलन होता है, बाद में खेत के रास्ते से प्रेमी बाँसुरी बजा-बजाकर पास बुलाने का इशारा देता है। बाँसुरी की आवाज से प्रेमिका को अपने पास बुलाता है।

लड़का-लड़की से कहता है कि- देखो न, लम्बी-लम्बी घास भी तो झुक जाती है, जिसमें हम तो मानव है, हमें भी एक-दूसरे को समर्पण कर देना चाहिये। ऐसा कहते ही वे दोनों प्रेमी-प्रेमिका एक दूसरे के हो जाते हैं।

हाय-हाय मालो फारवती खेड्डो।

खुर्द गिली बुद झारा रोसो डो।।

हाय-हाय मालो फारवती हुँजूडो।

खुर्द गिली सागा झारा रास डो।।

हाय-हाय मालो फारवती खेड्डो।

मूँ फुलुवा सुवासो हेज्जे डो।।

हे प्रिये! मेरा गाँव कितना सुन्दर है। यहाँ की वसन्ती हवा तुझे रिझायेगी। देख, नर्तकों की टोली आ गई। फूलों की सेज सज गई। रोसा घास की महक आ रही है। दिन-रात का मिलन होगा। पायल की झंकार बज रही है। महुवा की खुशबू आने लगी है। टेसू के फूल भी खिल उठे हैं।

प्रेमी और उसकी प्रेमिका अपने निवास गाँव को छोड़कर मौका पाते ही अन्यत्र दूसरे गाँव भाग जाते हैं, तब दोनों पक्ष के लोग उन्हें ढूँढ कर अपने गाँव लाते हैं और उनसे दण्ड एवं पंगत लेकर पीछा छोड़ते हैं। आदिवासी कोरकुओं में यह 'राजी-बाजी' प्रथा में आता है।

लबाड़ माण्डी, लबाड़ मखान, ठोसके नाकीकेन।। टेक।।
टारई टूरा नीपीड़ेन, मोनोई मेन्हान उखूखेन।। 1।।
गिली टालान ओडजेन, मखान घोनोज मूण्डा जोबेन।। 2।।
सानाकू डो सानी कूडो चावड़ी केन।। 3।।
ऊफून सद्दी डण्डो साए, बाबा जोम पेंगेटो जोबेन।। 4।।

कोरकू किशोरी धीरे-धीरे चक्की चला रही है। तब एक किशोर युवक कहता है कि- हम तुम कहीं भाग चलें। वे दोनों लड़का-लड़की भाग गये। पाँच माह तक छिपे रहे। जब गली में निकले, तब दोनों को जातिवालों ने खूब मारा और बड़े-बूढ़ों को बुलाकर जाति पंचायत कर लड़के वाले से चार सौ रुपये दण्ड तथा चावल की एक पंगत (भोज) ली, तब पीछा छोड़ा। फिर वे दोनों पति-पत्नि होकर रहने लगे।

हास-परिहास गीत

स्वावलंबी जीवन कितना सुखद होता है। यही भाव कोरकू किशोरी

द्वारा अपने प्रेमी को कहे जाते हैं, जिसमें स्वावलम्बी जीवन का पाठ सीखने को मिलता है।

इंया संगोनबो गवनी, इंया संगोनबो गवनी।
फेंटा लुपी सागेगवनी, इंया संगोनबो गवनी।। 1।।
डि हाटी भेभेरटेन गवनी, इंया संगोनबो गवनी।
इंया आंगोचा डोये गवनी, इंया संगोनबो गवनी।। 2।।
आमा संगोनचा डोये गवनी, इंया संगोनबो गवनी।
आमा संगोन खाड माया गवनी, इंया संगोनबो गवनी।। 3।।

प्रिये! तू बाजार चल। प्रिये! तू मेले में चल। ले रख साफी पगड़ी (सिर में बाँधने का छोटा कपड़ा जो कि एक मीटर के करीब होता है) मेरे संग चल सजनी। कंघी रखना तो भूल गया, ले मूंगे की माला रख। प्रियतम, तुम ही वह चीजे रखो। जब तुम अपनी चीजें नहीं रखते तो मैं क्यों रखूँ? यही हाल अब रहा तो, तुम्हारा मेरा क्या साथ होगा?

जो प्रेम पवित्र होता है, वही समाज के लोगों की दृष्टि में अपवित्र। तब ऐसी स्थिति में दोनों प्रेमी-प्रेमिका लुका-छिपी कर, किसी न किसी बहाने खेत-खलिहान तथा एकान्तवास में मिलने का प्रयत्न करते हैं। यही भाव कोरकू किशोरी ने अपने प्रेमी के प्रति व्यक्त किये हैं-

केशर बाड़ी, चोज डो बिबिडे।
डि लवन्डो केशर कखब्बा लाजेन।।
फिनी हितू नाका इंज हाजे लक्केन।
आमा हितू, चोज डो बिबिडे।।

आरा आडू, डेंगरा-बिबिडे।
इनी कामाय इंज हाजे लक्केन।।
आमा डोगेबा इंया जीवेन आनंडोटेन।

हे प्रियतम! यह साग-सब्जी की बाड़ी किसने तैयार की है? प्रिये! यह तेरे लिए ही है, तब तो- हे प्रियतम! मैं रोज-रोज आऊँगी। हे मीत! तूने बगीचे में क्या बोया है? क्या सब्जी-आलू बोया? क्या डँगर बोया? मैं इसी बहाने तुझसे मिलने आ जाऊँगी। तुझे देखकर मैं अपना मन बहला लूँगी।

जहाँ सुख है वहाँ दु:ख भी है, संयोग-वियोग और मिलन-विरह की ऐसी ही मनोव्यथा का चित्रण इस गीत में किया गया है। जिसमें विरह के दु:ख में वह भ्रम वश रास्ते चलने वाले राहगीर को ही अपना प्रेमी मान लेती है और जब उसे वास्तविकता का पता लगता है, तो वह लज्जित हो जाती है।

ओ छेने कोरा मिनखू मिमिलाटेनबा।
अंगा-केन्डे डो डो, म्या घिड़ी ठाड़बा।।
अंगा लियेन चीक्खल टेड़ पायबा, चीक्खल टेड़पायबा।
अपरांग मेटेन डिकू खे लन्डाबा।।
डिकूटेन सिमिल सिमिल मान्डी, माण्डी मान्डीबा।
डिकूटेन जीवा आनण्डोटेनबा।।
टाराई एटा पोटक्कू राजी-बाजीबा।
इनी छेने कोरा मिनखू ठाडबा।।
इनी इंया हित्तू बांगोन जा।

यहाँ जाने वाले राहगीर से पहिचान कर लो रे। इसके काले कमीज

पर कीचड़ डाल दो रे। जब उसे गुस्सा आये, तब उससे प्यार जताओ रे। हँसाओ रे। उससे मीठी-मीठी बाते करो रे। उसका मन बहलाओ रे। इसे प्रेम सूत्र में बाँध लो रे। अरे! यह तो राहगीर है। मेरा प्रेमी यह नहीं है।

लोरी गीत

कोरकू महिला अपनी व्यस्तता के कारण नन्हें बालक-बालिका की देखभाल का भार या तो बड़े बच्चे-बच्चियों (उम्र करीब 6 वर्ष 12 वर्ष तक) के या वयोवृद्ध महिला के सुपुर्द कर जाती है। ऐसी स्थिति में जब शिशु रोता है, तब उसे समझाने-बहलाने के लिए बहुत ही प्यारा मधुर लोरी गीत कोरकू युवतियाँ गुनगुनाती है।

ए नाहुली, ए नाहुली, ए नाहुली।
झापा लिया सोन्ना चुबड़ी।
घटाए डोए नाहुली नाहुली।
मुण्डाय चुलिया जोड़ा चखालो सरापे।

हे प्यारे! राजदुलारे शिशु! दरवाजे पर जो टंगी है, वह सुनहरी गुदड़ी चन्दोबा देख। तू अब उसे देख कर सो जा। फिर मैं नदी से एक बेवड़ा पानी लाऊँगी, खेत में जाऊँगी। बड़े होने पर तू भी मेरी तरह और तेरे पिता की तरह कार्य करना। अभी तो देख। (झोली-दो जूट की रस्सियों को घर की देहलीज या छत के खंबे से बाँधना है। उसमें कपड़ों की बनी गुदडी लपेटकर खड्डा बनाना, जिसमें नवजात शिशु को सुलाना। गुदड़ी (मूंगनी) पुराने कपड़ों की तीन-चार पुड़ों (तहों) में निर्मित धागों से सीकर पतला बिस्तर, जिन्हें कोरकू-नहाल व गोण्ड महिलाएँ बनाती हैं, जिन्हें 'मूंगनी' कहते हैं। चन्दोबा-कोरकू घरों में प्राय: शिशु की झोली के ऊपर छत पर एक

छोटी झोली कपड़े की टंगी रहती है, जिसे 'चन्दोबा' कहते हैं। यह चन्दोबा कपड़ों की कतरनों को काटकर बनाया जाता है, कतरने विभिन्न रंगों की होने से यह रंग-बिरंगी झोली आकर्षण युक्त होती है। इसके भीतर कोरकू माँ अपनी आवश्यकतानुसार चीजें काजल टिकिया, फुन्दे, कौड़ी, चिटकोरा रखती है। कोरकू पुरुष कृषि संबंधी कागजात पट्टे पावतियाँ रखते हैं। इसके बाहर कतरनों के बने फुन्दे, चिड़ियाँ, तितली लटकते हैं। शिशु इन लटकते, हवा में हिलते फुन्दों-चिड़ियों आदि को देखता रहता है, और लोरी के मधुर स्वर में शिशु सो जाता है।)

टुड़ी बीजो, अम्बो येलो, लेलोको।
पुरीजको बोको, अम्माय अम्बा।।
टखरा रुरीज सागेबा।
बोको बकी, जाम बोको पुरईको।।

हे बच्ची! तू मत रो। तेरी माँ अभी आने वाली है। तेरे लिए जंगल से जंगली छोटा फल लायेगी और तू उस फल को खाना। फल बहुत मीठा है। चुप हो जा, मत रो और सोजा।

हे भैया! चुप हो जा, चुप हो जा। तुम्हारे लिए माता-पिता ककड़ी फल लेकर आयेंगे। चुप हो जा भैया, चुप हो जा। तुम्हारे लिए भाई-बहिन मछली लेकर आयेंगे। चुप हो जा भैया, चुप हो जा। तुम्हारे दादा-दादी, तुम्हारे लिए बाजार से मिठाई लायेंगे।

कोरकू माताएँ वात्सल्य रस से ओत-प्रोत मातृ प्रेम की हिलोर से आंदोलित लोरिया गाती हैं, जिसे 'झुड़ी सिरिन्ज' कहते हैं। लोरियों में निर्धन माँ का शिशु भी रेशम के फुन्दे वाले सोने के पालने में झूलता है, जिसकी

रेशमी डोर होती है। लोरी गीत का अस्तित्व हर जगह है।

आम्बे इटान गोठान चिंचा,
इटान गोठान बो जा बोको सिमकू ननाऊ।
आम्बेन झूड़ी बाकीबा चिंचान,
झुड़ी बाकीबा बो जा बोको सिमकू ननाऊ।
आम्बे साइ अम्बारा चिंचा,
साई घेरा जा बो जा बोको सिमकू ननाऊ।

आम और इमली पेड़ के नीचे मुर्गे-मुर्गियों का घर है। चलो भैया, हम देखभाल करेंगे। आम और इमली में झूला बाँधकर झूलेंगे। चलो भैया हम देखभाल करेंगे। आम वृक्ष की छाया बहुत सुहानी है। इमली की छाया भी बहुत गहरी है। चलो भैया, हम देखभाल करेंगे।

इंया माय डो, इंया माय डो (ए)।
बापू आमा चान्खे डो।
स्यानी टूड़ी अजी माय डूँ डूँ।
सगेडा माय ए ए माय डो।

हे माँ! शिशु रो रहा है। वह भूख से व्याकुल हो गया है। गाय का दूध भी न रहा। गोधूलि की वेला हो गई। तुम शीघ्र आ जाओ। तुम्हारा मिलन गाय के बछड़े जैसा होगा। देख, पक्षी भी घर की ओर चले गए हैं। तारे भी निकल आए हैं। नर्तकों के पैर भी थिरकने लगें। हे माँ! अब तू जल्दी आजा।

चक्की गीत

बीडे डो बीडे बीडे डो टाड़ई, जाटी नी सुबाङ डो हेजे मा रे।
इञ बाङोन बाङोने पोर्‌या, इञानी हिगरा हाजेबा रे।
बीडे डो बीडे डो बीडे डो टाड़ई, कोम्बा नी रायेन डो बी मारे।
इञ बाङोन बाङोने पोर्‌या, इञानी हिगरा हाजेबा रे।

कोरकू महिलाएँ हाथ चक्की से अनाज पीसते समय जाटी-सिरिन्ज अर्थात् चक्की गीत गाती हैं। पहिले एक महिला गीत की कड़ी गाती है तथा दूसरी महिला दोहराती है।

प्रेमी, प्रेमिका से कहता है-हे प्रिय! उठो चक्की के पास जाओ और अनाज पीसो। हे प्रिय! मैं नहीं जाऊँगी, मुझे डर लगता है। हे प्रिय! उठो, अब तो मुर्गे ने भी बाँग दे दी है, प्रात: हो गया है। हे प्रिय! मैं नहीं जागूँगी और न ही चक्की के पास जाऊँगी, मुझे बहुत डर लगता है।

उत्पत्ति गीत

कोरकू मध्यप्रदेश के अलावा महाराष्ट्र के गाँवों में बसे हुये है। 'कोर' शब्द का अर्थ वनों में रहने वाले व्यक्ति से है, परन्तु 'कू' वर्ण जोड़ देने से उसका बहुवचन बन जाता है, अत: 'कोरकू' शब्द का अर्थ वनों में रहने वाले व्यक्तियों के समूह से है।

कोरकू जाति का अपने मूल निवास के संबंध में एक गीत में सुन्दर वर्णन है।

आले नी साँवलीगढ़ा, कोरो डे रान्डे
आले नी गांगड़ी, कोरो डो रान्डे

तू हमारी राह पर मत चल, हम कोरकू लोग ऐसे-वैसे नहीं हैं। हम साँवलीगढ़ (फोर्ट जिला-बैतूल में है) के रहने वाले आदिवासी हैं और वहीं से यहाँ आकर बसे हैं।

बाल गीत

कोरकू बालिकाएँ भाँति-भाँति का खेल-खेलकर अपना मनोरंजन करती हैं। इनमें एक खेल गुड़िया का बहुत ही प्रसिद्ध है, जिसमें एक लकड़ी के टुकड़े को काटकर उसे मानव मूर्ति का रूप दिया जाता है। उसे एक टोकनी में रखा जाता है, फिर इस मूर्ति को पत्तियों एवं फूलों से ढांक दिया जाता है और इसके चारों ओर गोलाकार वृत्त बनाकर मधुर गीत गाती हैं।

हाँ चाका चीका डोंगो।
ज्या भुंगाव डी रेरेना।
टुंगा रुगा डोडो ज्या।
भुंगा बाड़ी रेरेना।
वाडबा क सांगील ल।
भुंगा बाड़ी रेरेना।

हे मेरी प्रिय गुड़िया! तुम मौन क्यों बैठी हो? तुम यहाँ हो या नहीं। वह देखो, महुवा का पेड़, वह देखो अनाज की गठरी तुम उन्हें ला सकती हो। हम मिलकर खायेंगे-पियेंगे। अरे! देखो, तुम्हारी सास आ रही है। अब चुप होकर बैठ जाओ। वह देखो, ससुर आ रहा। अब सिर नीचे झुका लो। अब वे चले गये हैं। आँखे ऊपर उठा लो। देखो, नीला आकाश, हरे वृक्ष। देखो, ऊँची पहाड़ी, घना जंगल, सुन्दर जल प्रपात वे सब सुखी हैं, फिर तुम

दु:खी क्यों हो? अरे! दु:ख पाकर ही तो सुख मिलता है।

म्या नानी नानी सोनाय, बारी नानी नानी डो।। 1।।
घोंचा डान्डा साली रे माय, बारी नानी नानी डो।। 2।।
साम्बरे बोरे गोटकी डो माय, बारी नानी नानी डो।। 3।।

एक कोरकू लड़की अपनी सहेली से कहती है कि तू आड़ी-टेढ़ी एक लम्बी लकड़ी ले आ। हम लोग उस बाँकी लकड़ी से बोर की शाखा को झुकाकर बोर तोड़ेंगे और खट्टे मीठे बेर मजे से खायेंगे।

श्रृँगार गीत

खिटीन कामाय मिनखू उरा का कोनजई माय।
मुगिया साटोन बोझामाय गोलानी।।
कोनटे चोको गोलानी का जोड़ रे।
अमा ऊंगी अमा चोय मुन्दीय रे।।
मयंग टालान चोज उरेबा रे।
घघरा उरेबा अमा नांगा इटान रे।।
इनी अमा चोज खाण्डा उरेबा?
चिरायेन सी सो डिडना रे।।
कंजला उरेबा गोलनी कोनटे सी।
ओल गोलनी येन जोड़े रे।।

हे किसान की बेटी! तू किसके साथ कहाँ जा रही है? तू इतनी क्यों सजी-धजी है? बतला, तूने ऊँगली में क्या पहिना है? अरे! यह तो सुन्दर सी अँगूठी है। कमर में तूने क्या पहिना है? अरे! यह तो चाँदी की करधनी है।

यह तूने कौन सी साड़ी पहिनी है? यह तो चमकने वाली साड़ी है। इन्हें पहिनकर तो तू बहुत ही सुन्दर लगती है। तेरी आँखें तो अण्डी की फाँक है। तूने इन आँखों में क्या लगाया है? देख, तेरी आँखें कजरारी लग रही हैं।

श्रृँगार के बिना जीवन शून्य है। फिर कोरकू बाला भी पीछे क्यों रहे? वैसे भी कोरकू बालाएँ व युवक बहुत श्रृँगार प्रिय होते हैं। एक-दूसरे को रिझाने के लिए श्रृँगार करने का प्रचलन प्राय: सभी जनजातियों में है।

चिडुली गुटिये कोसोडये,
चिडुली गुटिये कोसोडये।
डाई कपार डाटो डबाये,
चिडुली गुटिये को सोडये।।

जेठा कपार डाटो डबाये,
चिडुली गुटिये कोसोडये।
सानी डाई डाटो डबाये,
चिडुली गुटिये कोसोडये।।

राटा खोपा होपेन सुसुबा,
चिडुली गुटिये कोसोडये।
इंया मेटेन कंजेला डुसाल उरेबा,
चिडुली गुटिये कोसोडये।।

इंया टीऐन सानी लिजा जेबा,
चिडुली गुटिये कोसोडये।

इंया नांगान सानी रुये गंगारू उरेबा,
चिडुली गुटिये कोसोडये।।

हे मेरी सखी! तू मेरी वेणी (चोटी) गूँथ दे। मैं प्रेमी के साथ बाजार जाऊँगी। देख, प्रियतम के साथ संभल कर जाना। कहीं पिता, ससुर, जेठ न देख लें। फिर तेरी चोटी का क्या होगा? तेरे पड़ोसी ने देख लिया तो तेरा हाल क्या होगा? हे सखी! तू चोटी गूँथ दे। मेरे बालों में लाल फूल लगा दे। आँखों में काजल लगा दे। हाथ में रुमाल दे दे तथा मेरे पाँवों में घुँघरु पहिना दे।

व्यंग्य गीत

कर्म ही पूजा है, फिर कोरकू प्रेमी भी क्यों पीछे रहे? यही भाव प्रेमिका द्वारा प्रेमी को प्रकट किया गया है। इसमें आलसी प्रेमी पर करारा व्यंग प्रेमिका द्वारा कसा गया है।

इनी लासी लवन्डा रे, इंयाखे मुण्डाय लक्केन।
इनी लासी लवन्डा रे, डिनभेर पारकोम गीटीजकेन।।

इनी लासी लवन्डा रे, आम हेवा-चारी लक्केन।
खाट लेन्डो कोरो रे, आम बांग कामाय लक्केन।।

इनी लासी लवन्डा रे, नाका टेन आम टेंगेनबा रे।
खिटी टालान कामाय लक्केन, ओरोव कोंखोजबा रे।।

इनी लासी लवन्डा रे, आम बीडेटेन ढोलकी रुरुम्बा रे।
इनी लासी लवन्डा रे, नाका आमा ढोलकी डेजेबा रे।।

हे आलसी प्रेमी! तू तो दिन भर टूटी खटिया पर सोता ही रहता है। हे आलसी प्रेमी! तू काम के समय में भी सोया ही रहता है। हे आलसी प्रेमी! अब तो तू उठ जा। खेत में काम कर, फसलें तेरा इंतजार कर रही हैं। हे आलसी प्रेमी! तू तो नींद खुलने पर भी फूटी ढोलक ही बजाता है। अब तो तेरी ढोलक बेकार हुई। अब तो तू भी बेकार हो गया है। तुम जैसे आलसी (ढीला आदमी) से अब प्रेम कौन करे? कौन तालाब के पास जाकर प्यासा रहे? अब कौन तेरी पत्नि बने?

विरह गीत

जब एक लम्बे अन्तराल तक प्रेमी-प्रेमिका से दूर रहता है या परदेश चला जाता है, तब प्रेमिका उसके विरह में व्याकुल हो जाती है। यह व्याकुलता उसकी मुँहलगी हमजोली समझ लेती है और उसके दु:ख को दूर करने के लिए उसे सांत्वना देते हुए कहती है-

कुटकी कुटकी जा ममाबा बोको।
कुटकी कुटकी ममाबा रे।।
सवाँ ममाबा बोको।
आमा रंजना रे।।
टुडी ममाबा आमा बबाके।
मुसना डाले मुण्डाय रे।।
चोलना रंजना बजना ममाबा रे।

हे सखी! तू विरह में क्यों बैठी है? उठ, जा अपने काम में लग जा। कुटकी, भादली, साँवा, धान अब बो दे, फिर पकने पर काट लेना। तेरा प्रेमी जब परदेश से आये, तब उसे तू क्या खिलायेगी? क्या उसे भूखा ही रखेगी?

हे प्रिय! सहेली हमजोली, अब तू देरी मत कर। उठ व्यर्थ का क्यों रोना रोती है, अपने काम में लग जा।

विरहणी का विरह जब अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाता है, तब वह अपना मंतव्य अपनी सखी को प्रकट करती है। वह कहती है कि- हे सखी! मैं प्रेमी के बिना एक क्षण भी नहीं रह सकती। मेरी स्थिति ऐसी है कि 'जल बिन मछली, घुँघरु बिन नृत्य' जैसी हो गई है।

इंयाखे रंगो रंगावकेन रे।
हित्तू इंयाखे रंगो रंगाव केन रे।।
गावाँ हिचड़िया को रे।
इंयाखे रंगो रंगावकेन रे।।
इनी गावाँ नामरिया को।
इंयाखे रंगो रंगावकेन रे।।
राटो-डिन डिजाका ध्यानबा रे।
हित्तूटेन पियार डडावकेन रे।।

मैं तो प्रेमी के रंग में भींग गई हूँ, सब कुछ भूल गई हूँ। मुझे तो प्रेमी ने प्यार में रंग लिया है। दिन-रात उसकी याद सताये रहती है। मैं क्षण भर भी उसके बिना नहीं रह सकती। हे सखी! तू उसको ढूँढ़ कर ला।

गोदना गीत

कोरकू नारियों में गुदना (गूदनी) गुदवाने का आम रिवाज है। कोरकू नारियाँ निर्धनता के कारण अपने इच्छित गहने नहीं पहिन सकती। इस कारण वे गहनों की आकृतियाँ शरीर में ही गुदवा लेती हैं। इसी से संबंधित

यह गीत है-

चौफार गोडुवा डि गोडुवा।
गुडना गोडुवा डि गोडुवा।।
म्हारा बकी बाई डि।
डी चौफार गोडुवा।।
मूं गोडूना डि मुकिया पुली।
टिकड़ी गोडूना डि बिन्डिया।।
पाखड़ा गोडूना डि बाउटिया।
टी गोडूना डि खंगली।।
नांगा डेगो गोडूना बिडिया।
लुतुर गोडूना डि साकोम।।
टोपड़े गोडूना डि झारा।
डिम ढोठा जुमू डि गोडूना।।

हे सखी, हे बहिन! मैं क्या गुदवाऊँ? हे बहिन! तू नाक में फूली, माथे पर बिन्दी, बाँह में बाहुंटा, पैर में बिछिया गुदवा ले। कान में पत्ता, घुटने में घास और छाती पर प्रेमी का नाम।

पर्व-त्यौहार संबंधी गीत

कोरकू, चैत्र और कुँआर में नवरात्रि के अवसर पर देव-दशहरा गीत गाते हैं, जिसे 'गोमज सिरिन्ज' कहते हैं। इस अवसर पर कोरकुओं के पड़िहार को देवताओं का भार आता है। ऐसी मान्यता है कि नवरात्रि में पड़िहार, बाधा दूर करने में सहायक होता है। वह गण्डा-ताबीज के अलावा

दाण-बाण देकर रोगियों को ठीक भी करता है। इसलिए कोरकू, शक्ति की पूजा-उपासना नवरात्रि में करते हैं।

आग्रूकेन जा गोमेज बाबा कोरकू ढाणा।
टोने डाई कू दारोमेन, आग्रुकेन जा गोमेज बाबा।
मंगल डाई के दारोमेन, आग्रुकेन जा गोमेज बाबा।
टोने डाई कू दारोमेन, आग्रुकेन जा गोमेज बाबा।
सोमा डाई कू दारोमेन, आग्रुकेन जा गोमेज बाबा।

हे भाई! कोरकू गाँव में देव-बाबा आये हैं। देव बाबा किसके यहाँ आये हैं? देव बाबा मंगल भाई के आँगन में आये हैं। हे भाई! देव बाबा किसके आँगन में आये हैं। हे भाई! देव बाबा सोमा भाई के आँगन में आये हैं।

बारा नी बीड़ी गज मण्डवा।
गोमेज आमा बारा नी बीड़ी गज मण्डवा।
मण्डवा लियेन जोड़ा लिम्बू आखाकेन जा।
गोमेज आमा बारा नी बीड़ी गज मण्डवा।
मण्डवा लियेन जोड़ा नारोयेल आखाकेन जा।
गोमेज आमा बारा नी बीड़ी गज मण्डवा।

हे देव बाबा! तुम्हारा बारह बेली का मण्डप बना है। मण्डप के ऊपर दो नींबू हम बाँध रहे हैं। हे देव बाबा! मण्डप में दो नारियल बाँधकर हम तुम्हारे मण्डप का श्रृँगार कर रहे हैं। हे देव बाबा! बारह बेलियों का मण्डप कितना सुन्दर है।

चेला चेला मेटेन, हाकोबा,
राम चेला बाङ डोगे मा रे।
नारोयेल नी जीव बिलमाकेन,
राम चेला बाङ डोगे मा रे।
लिम्बूड़ा नी जीव बिलमाकेन,
राम चेला बाङ डोगे मा रे।
राम चेला ओलेन दर्जी नी दुकानेन,
घोंघटा नी जीव बिलमाकेन।
राम चेला बाङ डोगे मा रे।

देव दरबार में राम नाम के चेला की पुकार हो रही है, लेकिन राम का कहीं पता नहीं है। हे भाई! राम चेला देव-पूजन के लिए बनिये की दूकान से नारियल, माली के यहाँ से नींबू और दर्जी के यहाँ से घोंघटा (देव-वस्त्र) लेने गया है। राम चेला यहीं-कहीं बिलम गया होगा।

आम्बे लियेन डागानेने नांगो, बिञ आसूड बा।
कुम्हार आबा कुम्हार आबा, आमा डिवा इली जा।
इञा उरान गोमेज हेजकेन, इञा डिवा बालेवा।
तीली साना तीली साना, आमा सुनुम इली जा।
इञा उरान गोमेज हेजकेन, इञा डिवा बालेवा।

आम वृक्ष की शाखा पर नाग-नागिन का जोड़ा बैठा है। एक कोरकू युवक कुम्हार के यहाँ जाकर कहता है-हे कुम्हार दाजी! तुम मुझे माटी का दीपक दो। मेरे घर देवता आये हैं। मैं दीपक जलाकर उनकी पूजा करूँगा। हे तेली दाजी! तुम मुझे तेल दे दो। मेरे घर देवता आये हैं। मैं दीपक

जलाकर उनकी पूजा करुँगा।

बो मखान बोमा जा गोमेज बाबा,
बो जा नर्मदा आंगुलिज।
टुनूमे गितिच्केन गोमेज बाबा,
बो जा नर्मदा आंगुलिज।
आमा सेट्टो आग्रूयेन गोमेज बाबा,
बो जा नर्मदा आंगुलिज।

हे देव बाबा! तुम नर्मदा स्नान के लिए चलो। हे बाबा! नींद से जागो। उठो देव! नर्मदा स्नान के लिए चलो। हे बाबा! तुम्हारी शक्ति उतर गई है। हे देव! नर्मदा स्नान के लिए चलो।

कोरकुओं में नवरात्रि में पड़िहार को भाव आता है। इसके पूर्व और नवरात्रि के बाद वह नर्मदा स्नान के लिए अवश्य ही जाते हैं। मान्यता है कि नर्मदा स्नान से शुद्धीकरण हो जाता है।

बोम जा बोम डाई, गोमज के ममा जा।
टोने मा घाटो डाई, गोमज के ममा जा।
नर्मदा माई घाटो डाई, गोमज के ममा जा।
ओंकार जी घाटो डाई, गोमज के ममा जा।

हे भाई! देव-बाबा स्नान के लिए जा रहे हैं। देव बाबा कौन से घाट पर स्नान के लिए जा रहे हैं? हे भाई! देव बाबा नर्मदा नदी के तट पर स्नान के लिए जा रहे हैं। हे भाई! देव बाबा नर्मदा स्नान के लिए ओंकारेश्वर जा रहे हैं।

ए माय अम टूगांनटेन हे जेबा?
चोज अम धौलागढ़ मटेन हेजेबा?
ए माय डो आले, चोज कासू जेबा?
ए माय अम चोय साजोनबा? सागेबा?
चोय अमा मिया घंघरा साजोनबा? सागेबा?
फिनी अमा माय अव्वलका उरेबा?
चोज अमा माय कोम्बा जीलू सागेबा?
नाका अबुंगखे बाओंग जामबा।
इनी साजोनबा, खान्डा एटा चुरगी।
नाका अम सब्बो अबुंगखे सिमिलबा। अरुबा।

हे माँ! तुम कौन से देश से आई हो? क्या तुम धौलागढ़ से आई हो? हे माँ! तुम्हें किसने दुःख दिया है? हे देवी! तुम क्या चाहती हो? क्या तुम्हें एक घाघरा चाहिये? पर तुम तो ठीक-ठाक पहनी हो? क्या तुम्हें बलि चाहिये? अब हमें मत सताओ। यह लो बलि, लुगड़ा और कंचुकी (चोली)। अब तुम हम सबको आशीष दे जाओ।

फगनई गीत

कोरकुओं में कार्तिक माह की देव-एकादशी से चैत्र की रंग-पंचमी तक होली गीत गाये जाते हैं। इन गीतों को 'फगनई सिरिन्ज' कहते हैं। रात्रि में भोजन आदि से निवृत्त होकर पंचायत भवन, मनोरंजन गृह या गाँव पटेल के यहाँ सभी लोग एकत्र होते हैं। ढोल, मंजीरा और थाली की संगत से श्रृँगार रस से ओत-प्रोत फगनई गीत गाये जाते हैं।

माले माले नी रे ढुपु खोपा डो सांगु।
धारणी हाटी सेनेबा डो, ढुपु खोपा घटायेन।
ढुपु मा खोपा लुतुरा उरी।
बुचू मा तुरूप, मुचुर मेण्टी लंडायेन।

हे प्रिय! मुझे सुन्दर-सुन्दर फूल ला दो। मुझे धारणी बाजार जाना है। प्रेमी अपनी प्रेमिका को अकाव फूल लाकर देता है। प्रेमिका फूलों का गजरा बनाकर जूड़े में लगाती है। जब प्रेमिका दर्पण में निहारती है तो गजरे को अपने रस कलशों से छूता देख, मन ही मन मुस्कुराने लगती है।

बो सांगू बो डो, आजोमा रेवा रासी डोंगोरेन।
साना टावटेन नी सानी सेने मा डो।
पोट्टा टावटेन नी टारई सेने मा डो।
बो सांगू बो डो आजोमा रेवा रासी डोंगोरेन।

हे प्रिय! मेरे साथ जंगल में चलो। देखो, सयाने के पीछे सयानी जा रही है। हे प्रिय! युवक के पीछे युवती जा रही है। हे प्रिय! तुम भी मेरे साथ-साथ जंगल में चलो।

रे नावा बीरोबानी ऊजाड़ा खेड़ा,
साई लियो जा नावा बीरोबानी।
रे नावा बीरोबानी, लोइटी सोकड़ा मीनू जोफे।
रे नावा बीरोबानी, सुबाङ केन की रांगेन बाङ।
रे नावा बीरोबानी, गितिच्केन की डुनुम बाङ।

हे प्रिय! ये कैसे उजाड़ गाँव में मुझे ले आये हो। यहाँ वृक्ष की छाया

भी नहीं है, यह गाँव तो वीरान है। देखो! तवे के ऊपर की रोटी बिल्ली खा गई। कोई काम भी नहीं है। कोई काम न होने से मैं दिन-भर फुरसत में ही बैठी रहती हूँ, इस कारण मुझे भूख भी नहीं लगती है। सोने की इच्छा होती है, लेकिन नींद भी नहीं आती।

जाम्बू पाला इलीडो खाड का मानेली।
गाड़ा टालान खबाखुबू, मंगाड़ मेटेन हिगराएन।
खिटी टालान खबाखुबू, मीनू मेटेन हिगराएन।
डोंगर टालान खबाखुबू, कुला मेटेन हिगराएन।
उसरी सुबाङ खबाखूबु, मामा साना हिगराएन।

जब हम जामुन पत्ते लेने जाते हैं। तो जंगल में बहुत डर लगता है। नदी जाते हैं, तो मगर का भय लगता है। खेत में जाते हैं, तो जंगली बिलाव का डर रहता है। पहाड़ पर जाते हैं, तो शेर का भय लगता है। जब हम घर की उसारी में बैठते हैं, तो बड़े-बूढ़ों का डर लगता है। भय के कारण हम कहाँ जायें? इसलिए जंगल का जीवन ही सबसे श्रेष्ठ है।

माघ और फागुन माह (फरवरी-मार्च) में कोरकू ग्रामों में मृदंग, ढोलक, ढोल, टिमकी, चिकारा, अलगोझा, तुरही चिटकोरा की ध्वनि पर सजनई-फगनई लोकगीतों की धूम मची रहती है। ये गीत अधिकांशतः होलिकोत्सव के अवसर पर ही गाये जाते हैं। इन गीतों में प्रणय गीत तो प्रचलित हैं ही, साथ में रंग में भीगे वातावरण में देवी-देवता भी क्यों पीछे रहें। उन्हें भी इस रंग भरे मौसम में सम्मिलित होने के लिये आमंत्रित किया जाता है।

खेन्डरा हुँजू डाई होली रे।
कजली डोंगरेन हुँजू डाई रे।।
अमा हेज्जे मेटेन डाई।
केन्डे टाड़ई राटा डायेन।।
मूँठवा हुँजू डाई होली रे।
खेडा हुँजू डाई होली रे।।
खन्डेरा हुँजू डाई होली रे।

हे खनेरा देव! चलो, हम तुम होली खेलें। देखा, तुम्हारे आने से, काली लड़की भी लाल हो गई। चलो-मुठवा देव, होली खेलें। चलो खेड़ा देव, होली खेलें। हे देवों! चलो, हम तुम होली खेलें।

होलिकोत्सव से संबंधित इस लोकगीत में जहाँ रंग से भरे वातावरण में जनमानस भीगा रहता है। वहीं पक्षी भी फिर भला पीछे क्यों रहे? इसी कारण एक स्थानीय पक्षी (गोंगुल्या) नीलकंठ भी अपने विचार प्रगट करने में नहीं चूकता। जिसका सरस हृदयंगम चित्रण इस गीत में कोरकू जनमानस ने व्यक्त किया है।

गोंगोल्या रे, रेरा रांगी, सुसुन बाई कानिया।। टेक।।
टोने डेवाएन, निवटो कोखोंजबा।
ओटे-आकसो, निवटो कोखोंजबा।।
डिया टेन्डेज गोमजो, निवटो कोखोंजबा।
कीलार मूँठवाकू, निवटो कोखोजबा।।
टप्ती नरबडाकू, निवटो कोखोंजबा।
साँजे डेवीकू, निवटो कोखोंजबा।।

भूट पिटरकेन निवटो कोखोंजबा।
रावण-मेघनाटकू निवटो कोखोजबा।।

गोंगुल्या (नीलकण्ठ) पक्षी नाच रहा, गा रहा और झूम रहा है। चलो हम भी गोल-गोल घेरे बना-बनाकर नाचे-गायें। कौन से देवता को निमंत्रण दिया है? जमीन-आसमान को निमंत्रण दिया है। सूर्य-चन्द्र को, किलार मुठवा बाबा को, ताप्तीमाई-नर्मदामाई को, सँझा देवी को दैत्यों-भूतों को, देव-पितरों को और रावण-मेघनाथ को, सबको निमंत्रण दिया है। खूब नाचो-गाओ।

अम चोचोरो टेन, रागेबा कोम्बा,
अम चोचोरो टेन रागेबा कोम्बा।
भुमका उरगा काबरी पोडे,
केन्डे केन्जा कोम्बा, चोचोरो टेन रागेबा।
पटला उरगा पुलुम पोडे,
केन्डे केन्जा कोम्बा, चोचोरो टने रागेबा।

मुर्गा बाँग दे रहा है। भोमका के घर की काबरी पठोड़ मुर्गी अब जवान हो गई है। उस जवान मुर्गी को देखकर मुर्गा बाँग दे रहा है। पटेल के घर की भी सफेद मुर्गी अब जवान हो गई है। उस सफेद पठोड़ मुर्गी को भी देखकर मुर्गा बाँग दे रहा है। मुर्गी को राजी करने के लिये मुर्गा बाँग दे रहा है।

झामटा गीत

झामटा हुंजू गेल्जा हेजकेन जा लंका रावण,
झामटा हुंजू गेल्जा हेजकेन रे।

ओसरीना जाझमा बिडिले जा बाई रात्री,
झामटा हुंजू गेल्जा हेजकेन रे।
चुरु भर डा नी आनुए जा बाई रात्री,
झामटा हुंजू गेल्जा हेजकेन रे।
जांजरी चिलोमा नी आनुए जा बाई रात्री,
झामटा हुंजू गेल्जा हेजकेन रे।

होली खेलने लंका से राजा रावण आये हैं। हे बाई! उसारी में जाजम बिछा दे। हे बहिन! राजा रावण को एक लोटा पानी पिला दे। हे बाई! राजा रावण को तम्बाकू-चिलम पीने के लिए दो। हे बहिन! लंका के राजा रावण होली खेलने आये हैं।

पर्वोत्सव गीत

कोरकू पर्व-उत्सव डोडबली, कमला पूनम, होरियार, सजनई-फगनई, ठाठिया आदि अवसरों बालक-बालिकाएँ घर-घर जाकर नाचते-गाते उत्सव का महत्त्व बतलाते हैं। फलस्वरूप गृहस्वामी या गृहिणी उन्हें नेग बतौर कुछ अनाज देती है। इसके पश्चात् एकत्रित अनाज को पीसकर वन्य भोजन किया जाता है। इसी अवसर पर इनका एक बहुत ही प्रचलित गीत है, जिसमें किसके घर जाना, किसके घर नहीं जाना। कौन संपन्न है? कौन विपन्न है? इसका वर्णन किया जाता है।

ज्येष्ठ माह की अमावस्या को आने वाला त्यौहार डोडबली है, जिसमें वर्षा के लिए इन्द्रदेव का आव्हान किया जाता है। एक लड़का जामुन के पत्तों से शरीर को ढँककर (वस्त्रहीन रहकर) रहती है। उसकी कमर में एक रस्सी बाँधकर दूसरा लड़का खींचता जाता है। वह लड़का नाचता जाता

है, बाकी के सब लड़के गीत गाते जाते हैं। इसी दिन एक लड़की अपने सिर पर गोबर का एक कुण्डा (उपला) रखती है, शेष लड़कियाँ गीत गाती हैं। गृह स्वामी या गृहिणी इन दोनों लड़के-लड़कियों पर ऊपर से ठण्डा पानी डालते हैं। उसके पश्चात् अनाज देते हैं।

डोडबली गीत

किलोरा रे किलोरा, डिजाका उरा बोझा रे।
आलेनक ओरोव डी जेबा।।
डुडा सेलो बोझा रे, पटली उरगा बोझा रे।।
भूमका उरगा बोझा रे, पड़ियार उरगा बोझा रे।
चुधरी उरगा बोझा रे, रजालिया उरगा बोझा रे।।
सानी माय उरगा बोझा रे, आलेनकू ओरोव डी जेबा रे।।

हे साथियों! हे भाईयों! हमें उसी के घर जाना है, जो हमें कुछ अनाज दे सके। हे भाई! हमें अनाज कौन देगा? हे भाई! हमें अनाज भोमका देगा। चलो, हम उसी के घर-आँगन में चले। चलो, हम क्रमशः पड़ियार, चौधरी, रजालिया तथा धनी लोगों के घर चलें। फिर हम चलें नर्म हृदय वाली बूढ़ी दादी के यहाँ, जो प्यार से गुड़ देगी, ठण्डा पानी पिलायेगी। फिर हम लौट आयेंगे।

गमनाय आले सुसुन लक्केन, गमनाय आले सुसुनबा।
उरा-उरा आसीबा डो, गमनाय आले सुसुनबा।
भावई महीना हेजकेन मा डो, गमनाय आले सुसुनबा।
रेमाय डा नी डुलेमा डो, गमनाय आले सुसुनबा।
गांगड़ा जोंदरा सागे मा डो, गमनाय आले सुसुनबा।

हे गमनाय! हम नाच रहे हैं। हम घर-घर जाकर नाचेंगे और अनाज मागेंगे। भादों महिना आ गया है। हे रेमाय! गमनाय पर पानी डालो और हमको अनाज दो।

बारा महना हेजकेन डो, गमनाय डा नी सागे मा रे।
बाबा पाला लोखोड़ेन डो, गमनाय डा नी सागे मा रे।
कोठी गूं सागे मा डो, गमनाय डा नी सागे मा रे।
बण्डा मूं, सागे मा डो, गमनाय डा नी सागे मा रे।

बारह महीने बाद डोडबली पर्व आया है। धान के पत्ते सूख गये है। हे गमनाय! पानी लाओ। कोठी में से गेहूँ लाओ। बण्डा में से महुआ लाओ। धान के पत्ते सूख गये हैं। हे गमनाय! पानी लाओ।

डेडेरा कू ओजावेन ओजावेन।
जाम्बू पाला लोखोड़ेन लोखोड़ेन।
म्या नी चुरु डा नी रेमाय डूले डो।
म्या नी कोषो ओरोव रेमाय सागे डो।
डेडरा कू ओजावेन ओजावेन।
जाम्बू पाला लोखोड़ेन लोखोड़ेन।

हे माँ! जामुन के पत्ते सूख गये हैं। एक लोटा पानी डाल दे। एक टोकनी भर अनाज दो। हे माँ! जामुन के पत्ते सूख गये हैं। एक लोटा पानी डाल दे।

डोडबली पर्व पर कोरकू युवक-युवतियों द्वारा जो गीत गाये जाते हैं, उन्हें 'गमनाय सिरिन्ज' कहते हैं। युवतियाँ सिर पर तवेनुमा टोकनी में गोबर

का मेंढक बनाकर रखती हैं। जिस पर गृह-स्वामिनी पानी छोड़ती है। सामर्थ्यानुसार अनाज, रुपये-पैसे भी देती है। प्रत्येक घर जाकर युवतियाँ यह गीत गाती हैं।

गमनाय गमनाय दे तो दे, दे तो दे।
दे तो आँगन नाचन दे, नाचन दे।
कोठी में नहीं तो बण्डा फोड़ी ने दे।
बण्डा का नाज हमको दे।
दे माय दे जल्दी दे।

हे माँ! हमको अनाज दे। हम तुम्हारे आँगन में नाचेंगे। हे माँ! कोठी में से अनाज दे। हे माँ! कोठी में नहीं हो तो बण्डा फोड़कर हमें अनाज दे। दे माँ दे, जल्दी दे।

झूला-गीत

खम्बा गड़ाटिये सावन हेयेन डो।
खम्बा गड़ाटिये हिन्दोड़ा टोले।
रेशम डोरी डो बैनी टोले डो।
सावन हेयेन डो बैनी आसूडे।
गंनाय बैनी आमनी हाजे आसूडे।
जमनाय बैनी डो आम बी आसूडे।

हे सखी! खम्भा गाड़ लो। सावन आ गया है। हे बहन! खम्भा गाड़ो। झूला बाँध लो। रेशम की डोरी से झूला बाँध लो। हे बहिन! सावन आ गया है। झूले पर हम झूलेंगे। हे गंगा बहिन! आओ झूला-झूलो। हे जमुना बहिन!

आओ, झूला-झूलो।

श्रावण माह में राखी-पूर्णिमा के दिन, कोरकू युवक गाँव के किसी चौक में खम्भे गाड़कर झूला तैयार करते हैं। कोरकू युवतियाँ झूले पर झूलते हुए झूला गीत गाती हैं। झूला गीतों को 'ढोलार सिरिन्ज' कहते हैं।

सावन हेयेन डो डाई, राखी हेयेन डो डाई।
ढोलार टोले डो डाई, टोले डो टोले डाई।
पोर्‌या न सोरी जोरे, टोले मा टोले डो।
इञाडाई सोन्ना हिन्दोड़ा टोले, आसूडे आसूड डो।
सोमाबाई सोन्ना हिन्दोड़ा आसूडे।

सावन आ गया है। राखी पर्व भी आ गया है। हे भैया! झूला बाँध दो। ये गाँव के लड़के झूला नहीं बाँधते। हे सखी! मेरे भैया झूला बाँध रहे हैं। मेरे भैया! सोने का झूला बाँध रहे हैं। हे बहिन! आओ, झूले पर झूलो। हे सोमा बहिन! आओ, तुम भी झूला-झूलो।

इनी ढोलारू जे टोले।
टोले मा टोले मंगल डाई।
सोन्ना हिन्दोड़ा टोले।
इनी ढोलारू जे आसूडे।
इनी ढोलारू सोमई आसूडे।
सोन्ना हिन्दोड़ा आसूडे।

हे सखी! यह झूला किसने बाँधा है? हे बहिन! यह झूला मंगल भाई ने बाँधा है। हे सखी! झूला कौन झूल रही है। हे बहिन! झूले में सोमई झूल

रही है। हे बहिन! मंगल भाई ने सोने का झूला बाँधा है। आओ, हम-तुम झूले में झूले।

काका रे काका! गांवेन टाला नी,
गिलि टाड़ई कू नी ढोलार टोलेन, इञ सेने।
कोन्जई-कोन्जई, कोन्जई डो आबू उरान,
जेका बाङ बकी सेने।
आबा जा आबा, आबा जा उरगा टालान,
ढोलार टोलेन इञ सेने।

हे काका! गाँव की बीच गलियों में मेरी सहेलियों ने झूला बाँधा है। मैं झूलने के लिए जाऊँ? हे बेटी! अपने घर में कोई नहीं है, तू मत जा। हे पिताजी! घर में ही झूला बाँध दो, नहीं तो में झूला-झूलने चली जाऊँगी।

डाई डोलारू बागी मा जा,
जेमा उरान ढोलारू इञ सेने बा।
इञ सेनेबा एकाली।
हाटीटेन डोरा सागे मा जा।
डाई ढोलारू बागी मा जा।

हे भैया! झूला-झूलने के लिए झूला बाँध दो। झूला-झूलने के लिए मैं अकेली किसके यहाँ जाऊँ। भैया, तुम बाजार जाओ। बाजार से रस्सी खरीद कर लाओ। हे भैया! झूला बाँध दो।

इञा नागा नी राना बीरा, जानोम नी सोयेन।
आजी माण्डी डो राना बीरा, बिजोली नी चमके।

इलूरा माण्डी डो राना बीरा, असमाना ऊजे।
कनकार माण्डी डो राना बीरा, गोमज नी ओडे।

पत्नी, पति से कहती है–हे राजा! मेरे पैर में काँटा लग गया है, इसलिए मैं घर का काम–काज नहीं कर पाती हूँ, लेकिन जब तुम्हारी बहिन बोलती है तो ऐसे बोलती है जैसे बिजली चमक रही हो। देवर बोलता है तो ऐसा लगता है कि आसमान गिरा हो। सास बोलती है तो ऐसा लगता है जैसे सूरज निकल रहा हो।

मंगल ढोके पावी रूकी जा, मंगल ढोके पावी रूकी।
इञ हाजेबा गाड़ा घेरान, पावी रूकी जा।
इञ हाजेबा कुआ घेरान, पावी रूकी जा।
मंगल ढोके पावी बकी रूये डोंगोरेन।
मंगल ढोके पावी बकी रूये उरागेन।
इञ हाजेबा साटा बाड़ीन, पावी रूकी जा।
मंगल ढोके पावी बकी रूये कोराटेन।
इञ हाजेबा आम्बे इटान, पावी रूकी जा।

कोरकुओं में आषाढ़ से भादों पोला अमावस तक डण्डा नृत्य व गीत गाने की प्रथा है। मुख्यत: श्रावण माह में राखी त्यौहार पर डण्डा गीत गाये जाते हैं। गीतों को 'डण्डा सिरिन्ज' कहते हैं। गीत श्रृंगार–रस प्रधान होते हैं।

हे मंगल! तू बाँसुरी बजा दे। नदी किनारे बाँसुरी बजाना, मैं आऊँगी। हे प्रिय! जंगल में बाँसुरी नहीं बजाना। गाँव के कुँए पर बाँसुरी बजाना, मैं आऊँगी। हे प्रिय! घर में बाँसुरी नहीं बजाना। गन्ने की बाड़ी में बाँसुरी बजाना, मैं अवश्य ही आऊँगी। हे प्रिय! तुम रास्ते में बाँसुरी नहीं बजाना।

अमराई में बाँसुरी बजाना, मैं जरूर आ जाऊँगी।

बो जा धारणी हाटी घाले इञा डाई।
बो जा धारणी हाटी घाले।
नांगा सोरइ उरीबा इञा डाई,
बो जा धारणी हाटी घाले।
नांगा आरे ससाबा इञा डाई,
बो जा धारणी हाटी घाले।
मायाङ जेमेका डोडोबा इञा डाई,
बो जा धारणी हाटी घाले।

बहिन–भाई से कहती है–चलो भैया, मुझे धारणी–हाट बता दो। मैं पैर के बिछियाँ पहनूँगी। चलो भैया, धारणी बाजार चलो। हे भैया! मैं पैर की कड़िया लूँगी। हे भैया! मैं कमर में पहिनने के लिए कन्दौरा भी लूँगी। चलो भैया, मुझे धारणी–हाट बता दो।

काचा नी काचा, बोचोगे बा सालो,
बीली न बीली जोमेबा।
जोमेबा सालो गाड़ा टाला रयनी जाम्बू रे रे ना।
म्या डामा रयनी जाम्बू मोला डो सालो।
बारी डामा रयनी जाम्बू मोला डो सालो।
गाड़ा टाला रयनी जाम्बू रे रे ना।

नदी किनारे जामुन–वृक्ष में बहुत फल लगे हैं। मैना, पके–पके जामुन खा रही है और अधपके नीचे गिरा रही है। युवक कहता है–हे मैना! तुम

पके-पके जामुन खा रही हो और अधपके नीचे गिरा रही है। हे मैना! ये अधपके जामुन भी इतने मीठे हैं कि यदि एक पैसे या दो पैसे में भी बेचे जायें तो भी महंगे नहीं हैं।

आम सालि सालि, कउंसो खोपा सालि डो।
आम सालि सालि, कउंसो खोपा सालि।
कउंसो खोपा सालि डो, इजकोड़ी सालि डो।
कउंसो खोपा सालि डो, बायेला ऐला सालिडो।
आम सालि सालि, कउंसो खोपा सालि डो।

हे प्रिय! मुझे जंगल से काँस का फूल ला दो। अरायल का फूल ला दो। हे प्रिय! गठालू फल की बेल भी ला दो। आज मुझे झूला-पूजन करना है।

गरुवा नी सलकन ढांढा, झल्का टिञ गरूवा नी।
गरुवा नी टी पोल्या, झल्का टिञ गरूवा नी।
गरुवा नी मायाङ जेमेका, झल्का टिञ गरूवा नी।
गरुवा नी नांगा बिलिया, झल्का टिञ गरूवा नी।

हे गोरी! आज तू बहुत ही सुन्दर लग रही है। तेरा रंग-रूप आज ज्यादा ही निखरा हुआ है। तेरे हाथों के कड़े बहुत ही सुन्दर हैं। तेरी कमर का कन्दोरा भी बहुत ही खूबसूरत है। तेरे पैरों की बिछिया भी सुन्दर है।

गाड़ा नी घेरान तटी झारा, रूचू रूडा खाडूबा रे।
सेने मा सेने डो बाओङ, आलोम बारेन माण्डीबा डो।
बाङोने जा बाङोने जा बाङोने ढोके, इञानी आबा डोडोबा रे।

आमानी आबा डोडो मरवान, इञा कुंजकार नोरूबा डो।
सेने मा डो सेने लाजो, आलोम बारेन माण्डीबा डो।
बाङोने जा बाङोने ढोके, इञानी माय डोडोबा रे।
आमानी माय डोडो मखान, इञा कनकार नोरूबा डो।
गाड़ा नी घेरान तटी झारा, रूचू रूडा खाडूबा रे।

हे प्रिय! नदी किनारे जहाँ हरी-हरी घास है, वहाँ चलो। हम प्रेम की बातें करेंगे। हे प्रियतम! मेरे पिताजी देख रहे हैं। हे सुन्दरी! तुम्हारे पिता देख रहे हैं तो क्या हुआ। वो तो मेरे होने वाले श्वसुर है। हे प्रिय! नदी किनारे एकान्त में चलो। हे प्रियतम! नहीं, मेरी माँ देख रही है। तुम्हारी माँ, मेरी होने वाली सास है। हे प्रिय! तुम्हारे माता-पिता यानी मेरे सास-ससुर देवता समान है। तुम मेरे साथ चलो, वो कुछ नहीं कहेंगे।

हाटी गल्जा हटोड़ाटेन, नामाय जाम मुवरा रे।
चोजा मा सान्टी रिलाना डो, नामाय जाम मुवरा रे।
आरे सान्टी रिसाना डो, नामाय जाम मुवरा रे।
चोजा मा सान्टी रिसाना डो, नामाय जाम मुवरा रे।
माठी सान्टी रिसाना डो, नामाय जाम मुवरा रे।

माता-पिता बाजार जाने के लिए आपस में बात कर रहे हैं। नामाय लड़की की रोने की आवाज सुनकर पिता ने कहा-नामाय की माँ, नामाय क्यों रो रही है? माँ ने कहा-नामाय के पास पैर के कड़े और हाथ की चूड़ियाँ नहीं है, इसलिए वो नाराज है।

मंगल जा बीडे गूं चना, सोमा बीडे गांजा।
मंगल नी जोवेन गूं चना, सोमा नुयेन गांजा।

सोमा नी गांजा नासा हेयेन जा, इञा उरा रिरिगजेन।
इञा उरा रिरिंगजेन, बारी उरागेन मुंयेन जा।

मंगल ने गेहूँ–चना बोया है। सोमा ने गाँजा बोया है। मंगल खाये गेहूँ–चना, सोमा पिये गांजा। सोमा गांजे के नशे में अपना घर ही भूल गया। वह दूसरे के घर में जा घुसा। जो जैसा बोता है, वो वैसा ही काटता है।

गोंगोल्या गीत

लाम्बो बाबा डो, लाम्बेई पाला बाबा डो, लाखो माना बाड़ी।। टेक।।
चोज डो लान्जो, चोजा ओरोव बीवीडे, लाखो माना बाड़ी।। 1।।
चोज डो लान्जो, सिमिल जो बीवीडे, लाखो माना बाड़ी।। 2।।
चीजे डो लान्जो, काटिज जो बीवीडे, लाखो माना बाड़ी।। 3।।
चोज डो लान्जो ऐंगान रोपा बीवीडे, लाखो माना बाड़ी।। 4।।
चोज डो लान्जो, मिरचा रोपा बीवीडे, लाखो माना बाड़ी।। 5।।
चोज डो लान्जो, कान्डा रोपा बीवीडे, लाखो माना बाड़ी।। 6।।
चोज डो लान्जो, गाजरे रोपा बीवीडे, लाखो माना बाड़ी।। 7।।
जर्र–जर्र–जर्र सगडो–सगडो–सगडो, जर्र–जर्र ज र्र र्र र्र सगडो।। 8।।

खेत में पहली बार धान बोई गई है। धान पकने पर कुँवार माह में काट ली गई है। उस काटी हुई धान में से दुबारा धान के पीक फूट रहे हैं। खेत फिर से दुबारा धान से लहलहा उठा है। एक कोरकू पुरुष अपनी प्यारी साली (लान्जो) से पूछता है कि ये काहे का रोपा डाला है? इस हरे–भरे खेत में। तब साली कहती है कि– हे जीजा! (टिंया) ये भटा, मिर्ची, कान्दा और गाजर का रोपा डाला है। सब कड़वे–मीठे बीज फल, साग भाजी का रोपा डाला है और धान तो दुबारा ऊग ही आई है।

गोंगोल्या रे रे रा रांगी, सुसुन डाई कानिया।
टोने मा जा गोमेज कू, निवटा नी कूले जा।
खेड़ा नी मुठवा गोमेज, निवटा नी कूले जा।
चांदो नी सुरूजो गोमेज, निवटा नी कूले जा।
लंका खे राजा रावण कू, निवटा नी कूले जा।

हे भाई कानिया! गोल–गोल घेरा बनाकर नाचो और गाओ। हे भाई! कौन–कौन से देवता को निमंत्रण दिया है? हे भाई! खेड़ा–मुठवा को निमंत्रण दिया है। हे भाई! चाँद–सूरज को निमंत्रण दिया है। हे भाई! लंका के राजा रावण को निमंत्रण दिया है। हे भाई! खूब नाचो–गाओ।

बीबी ना बिना तो गवलन, बिना आस नाम रे।
चारईजा कोना चारई जा कोट,
बीबी ना बिना तो गवलन, बिना आस नाम रे।
टोने मा देवा नांगा अनुज डो,
बीबी ना बिना तो गवलन, बिना आस नाम रे
खेड़ा नी मुठवा नांगा अनुज डो,
बीबी ना बिना तो गवलन, बिना आस नाम रे।

हे बहिन! मैं चारों दिशाओं में घूम आई हूँ, लेकिन मेरे मन की मुराद पूरी नहीं हुई, अब तो रही–सही आशा भी जाती रही। हे बहिन! तू आशा मत छोड़, तू देव–बाबा की शरण में जा, वे तेरी वे इच्छा अवश्य ही पूरी करेंगे। हे बहिन! मैं कौन से देव के पास जाऊँ? हे बहिन! तू खेड़ा मुठवा देव की शरण में जा, तेरी मनोकामना अवश्य ही पूर्ण होगी।

चांदगढ़ का चन्दाना, चन्दा डाई कुँअर जो।
चांदगढ़ हाटी टे सागे मा जा, चांदगढ़ लंका कोरा रे।
चांदगढ़ डाई खे चोज मा साजे, चन्दा डाई कुंअर जो।
चन्दा डाई खे फेटा मा साजे, चन्दा डाई कुंअर जो।
चन्दा डाई खे धुती मा साजे, चन्दा डाई कुंअर जो।

कोरकू युवती अपनी सहेली से कहती है–हे बहिन! मेरे भैया चाँदगढ़ के चन्दा राजकुमार के समान हैं। चाँदगढ़ बाजार से उनके लिए कुछ लाना है। हे बहिन! मेरे भैया को क्या शोभा देगा। हे सखी! तुम्हारे भैया को फेटा और धोती अच्छी सजेगी।

सुरूजो गोमज चमके जा बेटी नांदोली।
जो मैना जा बोले गोडोली खेलो रे।
चोजा मा सम्मान सालि जा बेटा नांदोली।
जो मैना जा बोले गोडोली खेलो रे।
धुती मा सम्मान सालि जा बेटा नांदोली,
जो मैना जा बोले गोडोली खेलो रे।
चोजा मा सम्मान सालि जा बेटा नांदोली,
जो मैना जा खोले गोडोली खेलो रे।
अंगा जा सम्मान सालि जा बेटा नांदोली,
जो मैना जा बोले गोडोली खेलो रे।

हे बेटा! वो देखो सूरज चमक रहा है, मैना बोल रही है। आओ बेटा, मेरी गोदी में खेलो। मैं तुम्हारे लिए बाजार से क्या–क्या लाऊँगी? हे बेटा! तुम्हारे लिए बाजार से धोती और कुर्ता लाऊँगी। आओ बेटा, मेरी गोदी में खेलो।

हेरोर्या गीत

बुबरू भूना जूना चाखना, सूको हुड़ी डो उबावेन।
साना टेन डो सानी टेन, सूको हुड़ी डो उबावेन।
बुबरू भूना जूना चाखना, सूको हुड़ी डो उबावेन।
टाड़ई टेन डो टार्या टेन, सूको हुड़ी डो उबावेन।
भुमका टेन डो भुमकी टेन, सूको हुड़ी डो उबावेन।

कोरकू पुरुष कुँआर से फागुन माह तक होरार्या गीत गाते हैं। स्थान भेद के अनुसार इन्हें होरियार सिरिन्ज भी कहते हैं। कुँआर माह में दशहरा से होरियार गीत गायन का प्रारंभ होता है।

अधजली लकड़ियों से बड़ी होली रचाई है। गाँव के वृद्ध स्त्री–पुरुषों ने होली रचाई है। युवक–युवतियों ने मिलकर होली रचाई है। भुमका–भुमकी ने होली रचाई है। गाँव के सभी लोगों ने मिलकर होली रचाई है।

गोमेजा किरण फुटाटिव वा ढोके,
आम टुंगान सेने मा रे।
इञानी मायाङ नी फेटा वाङ डो लान्जो,
इञ हाटी नी सेने मा रे।
ऊंचा नी फिफरी अम्बरा साई जा ढोके,
इञ हाटी चलकेन टेंगेन मा रे।
आमानी आयोम आयोम्बा लान्जो,
आम बकी हेजेबा रे।
इञानी आयोम आमानी कनकार जा ढोके,
आयोम्बा जेबा चोयेन बा रे।

हे प्रिय! सबेरे ही सबेरे आप कहाँ जा रहे हो? हे प्रियतमा! मेरे पास कमरबंध नहीं है, इसलिए कमर फेटा लेने को बाजार जा रहा हूँ। हे प्रिय! पीपल वृक्ष की गहरी छाया में तुम मेरा इन्तजार करना। मैं भी तुम्हारे साथ बाजार चलूँगी। हे प्रिये! तुम्हारी माँ नाराज होगी, तुम नहीं आना। हे प्रिय! मेरी माँ नाराज होगी तो क्या हुआ? मेरी माँ तो तुम्हारी सास बनने वाली है।

लुकु लुकु साकोम डो बेनी खेजेमा डो।
आलोम माया नी त्यायन डो।
गांगड़ा डोंगोरेन डो बेनी जिखी में डो।
बाबा रूरूम डो बैनी बाकमा डो।

हे बहिन! जिस प्रकार वृक्ष से पत्ता अलग होता है, टूटता है, उसी प्रकार हमारी जोड़ी भी टूट गई। बहुत दूर पहाड़ी गाँव में मेरी शादी हो गई है। हे बहिन! ससुराल में जरा भी फुरसत नहीं मिलती। दिन भर धान कूटना पड़ता है, बहुत ही मेहनत करनी पड़ती है।

खेर्‌या मोर्‌या सुटुएन डो, नाड़ी जोटा खाण्डावेन,
काली गुवाली जा भाग्या सिव सेने वा।
म्या इरा सिवेन भाग्या, आटा कोरा डोगेबा,
काली गुवाली जा भाग्या सिव सेने वा।
आमा ओखार टेगेन जा भाग्या, आम आटा जोमेबा।
बारी पारेन आटा सालि, चोजबे इज्ञ घालेबा।
धाड़की सेनेबा भाग्या इज्ञ इरावा,
आला लोम्बई बाये डी ड़िंगर आटा डिआयेन।
पेटेला उरगा कोन्टे जाटी,

काचा गीला जोंदरा, जाटी जीलेटजेन,
भाग्या आटा डिआयेन।

शिव, पटेल के घर का काश्तकारी नौकर है। शिव के बैलों का नाम खेर्‌या-मोर्‌या है। शिव खेर्‌या-मोर्‌या बैलों को लेकर कन्धे पर नाड़ी जोत रखकर काली गुवाली नाम के खेत में बखरने गया है। खेत बखरते-बखरते कुछ समय बाद वह रोटी की राह देखने लगा। शिव की रोटी तीसरे प्रहर पत्नी लाई। शिव की पत्नी कहती है-हे पतिदेव! बक्खर रोक कर, आप भोजन कर लीजिए। शिव पूछता है-रोटी लाने में इतनी देरी क्यों हो गई? पत्नी कहती है-हे पतिदेव! मैं सुबह से पटेल के यहाँ खेत पर ज्वार काटने गई थी। मजदूरी में पटेल ने मुझे गीली ज्वार दी। चक्की भी छोटी थी। ज्वार गीली होने के कारण पीसने में देरी हो गई, इसलिए रोटी समय पर न ला सकी।

बैला रिरोम निजा आबा ओलेना जो।
बेला जानुम निजा आबा सोयेना रे।
बेला जानुम निजा आबा डोगेमा जो।
बेला जानुम निजा आबा सोयेना रे।
इज्ञानी मेत् निडो कोन्जई डोडो बाङ।
आमा आयोम मेरान डो सेने मा रे।
बेला रिरोम निजा आयोम ओलेना डो।
बेला जानुम निजा आयोम सोयेना रे।
बेला जानुम निजा आयोम डोगेमा जो।
बेला जानुम निजा आयोम सोयेना रे।
इज्ञ कोनकू हुजू कोन्जई फरसतो बाङ।
आमा टिंया मेरान डो सेने मा रे।

हे पिताजी! मैं जंगल में बिल्व फल लेने गई थी। वहाँ जंगल में मेरे पैर में काँटा चुभ गया। हे पिताजी! पैर का काँटा निकाल दो। हे बेटी! मेरी आँखें कमजोर हैं, तू अपनी माँ के पास जा। हे माँ! मैं जंगल में बीला लेने गई थी, वहाँ जंगल में मेरे पैर में काँटा चुभ गया। हे माँ! काँटा निकाल दो। हे बेटी! मैं बच्चे को संभाल रही हूँ, तू अपने जीजा के पास जा।

रेवा पारन पावी साडी आजुमे डो,
रेवा पारन पावी साडी आजुमे रे।
जाटी-जाटी निडो डिंगर आजुमे डो,
रेवा पारन पावी साडी आजुमे रे।
आलोमा नी माण्डी डिंगर डायूबा डो,
रेवा पारन पावी साडी आजुमे रे।
बाबा रूरूम रूरूम डिंगर आजुमे डो,
रेवा पारन पावी साडी आजुमे रे।
आलोमा नी जूड़ी डिंगर डायूबा डो,
रेवा पारन पावी साडी आजुमे रे।

हे डिंगर! नदी के उस पार तू मेरी बाँसुरी की आवाज सुन ले। तू चक्की चलाते-चलाते ही बाँसुरी की आवाज सुन ले। हे डिंगर! तू धान कूटते-कूटते ही मेरी बाँसुरी की आवाज सुन ले। हे डिंगर! तू बाँसुरी की आवाज सुन ले, हमारा संग-साथ हो जायेगा।

सालो सेने मा मोरंगी पावना मा डो,
सालो सेने मा मोरंगी पावना रे।
आमाका कड़िया डो, मोरंगी इली मा डो।

आमाका जेमेका डो, मोरंगी इली मा डो।
आमाका लिजा डो मोरंगी इली मा डो।
सालो सेने मा मोरंगी पावना मा डो।

मैना, मोर के यहाँ मेहमान जा रही है। मैना के श्रृँगार-आभूषण देखकर मोर कहता है-हे मैना! तुम्हारे पाँव की कड़ियाँ बहुत ही सुन्दर हैं, मुझे तुम्हारी कड़ियाँ दे दो। हे मैना! तुम्हारे कमर का कन्दौरा अति सुन्दर है, तुम मुझे दे दो। हे मैना! तुम्हारा लुगड़ा भी बहुत ही खूबसूरत है। हे मैना! तुम मुझे दे दो।

सिरातो महना केसा फूलों वा, केसा खोपा सालि रे।
आमानी आबा डोगेबा लाजो, चुफर टे मा सालि रे।
डा नुनू बायना हाजे ढोके, मारची लियेन डोकी रे।
चेतो मइना जाम्बू पावलियेन, जाम्बू खोपा सालि रे।
आमा आन्टे डोगेबा लाजो, चुफटे मा सालि रे।
डोबाकू आरागा बायना हाजे ढोके, कोठा टालान डोकी रे।
दीवाड़ी मइना गेंदा फूलो वा, गेंदा खोपा सालि रे।
आमानी चंदवाकू डोगेबा लाजो, चुफरटे मा सालि रे।
सिंगेल कू बायना हाजे ढोके, आटा हुण्ढार जागा डोकी रे।

शिवरात्रि के महीने में पलाश के फूल खिले हैं। प्रेमिका-प्रेमी से कहती है-तुम मेरे लिए केशव के फूल ले आना। प्रेमी कहता है-यदि तुम्हारे पिताजी ने देख लिया तो क्या होगा? तुम पानी के बहाने आना और पानी रखने की मचान पर फूल रख देना। चैत्र माह में जामुन की टहनियों का तुर्रा बनाकर लाने को प्रेमिका कहती है। तब प्रेमी कहता है-यदि तुम्हारी माँ ने

देख लिया तो? प्रेमिका कहती है–तुम बैलों को छोड़ने के बहाने से आना और गोहाल में तुर्रा रख देना। दीपावली पर प्रेमिका गेंदा फूल लाने को कहती है, तब प्रेमी कहती है–कहीं तुम्हारे पड़ोसी ने देख लिया तो क्या होगा? तब प्रेमिका कहता है–तुम आग लेने के बहाने से आ जाना और फूल चौके में रख देना।

कठा अरगा पावना बाओङ, कठा अरगा पावना रे।
आमानी साड़िज मिरचा डो, आमा ढोटा तिरछा डो।
आमानी साड़िञ डंगरा डो, आमा ढोटा लंगड़ा डो।
आमानी साड़िञ ठिम्बुरू डो, आमा ढोटा सिम्बुडू डो।
आमानी साड़िज रिंझड़ा डो, आमा ढोटा कुन्जड़ा डो।

जीजा बाँस की कोंपले लेकर अपनी विवाहित साली के यहाँ मेहमान आया है। वह साली से मजाक करता है–हे साली! तुम्हारे घर के पिछवाड़े बाड़े में जो मिरचा है, उसी प्रकार तुम्हारा पति तिरछा है। तुम्हारा पति डंगरा जैसा लंगड़ा है। तुम्हारा पति टेमरू जैसा सेमडू है, और रिंझड़ा जैसा कंजूस है।

फूफू आमा माण्डी डो कारसी काना रबाङ टेका माण्डी।
सानी आमा माण्डी डो आम्बे कीड़ी खटा टेका माण्डी।
बाओङ आमा माण्डी डो जिलूगा कीड़ी सिम्बिल टेका माण्डी।
अइ आमा माण्डी डो चिंचा कीड़ी खटा टेका माण्डी।
आन्टे आमा माण्डी डो गुड़ा कीड़ी सिम्बिल टेका माण्डी।

हे फूफा! तुम्हारी बोली मटके पानी जैसी ठण्डी है। हे स्यानी माँ! तुम्हारी बोली आम की कड़ी जैसे खट्टी है। हे साली! तुम्हारी बोली गोश्त

जैसे अच्छी है। हे मौसी! तुम्हारी बोली इमली की कड़ी जैसी खट्टी है। हे माँ! तुम्हारी बोली गुड़ की कड़ी जैसे मीठी है।

सुवाना डुगू बा ढोके, सुवाना डुगू बा रे।
आमानी बेगड़ा पागड़ी सुवाना डुगू बा रे।
आमानी फेटका गेंदा, सुवाना डुगू बा रे।
आमानी धुती मा लाफड़ सुवाना डुगू बा रे।

हे प्रिय! आप बहुत सुन्दर हैं। आपकी कलगीदार पगड़ी के बारे में तो कुछ कहा ही नहीं जा सकता। कमर फेटे में लगा ऊन तो ऐसा लग रहा है मानो गेंदे के फूल हों। हे प्रिय! जब आप चलते हैं तो आपकी धोती के पल्ले का लहराना मुझे बहुत ही भाता है।

झलकेरी आम जाम्बू पाला, झलकेरी आम जाम्बू रे।
झलकेरी के चोज मा सागे, झलकेरी आम जाम्बू रे।
झलकेरी के टागली सागे, झलकेरी आम जाम्बू रे।
झलकेरी के चोज मा सागे, झलकेरी आम जाम्बू रे।
झलकेरी के जेमेका सागे, झलकेरी आम जाम्बू रे।
झलकेरी के चोज मा सागे, झलकेरी आम जाम्बू रे।
झलकेरी के आरे मा सागे, झलकेरी आम जाम्बू रे।
झलकेरी आम जाम्बू पाला, झलकेरी आम जाम्बू रे।

हे गोरी! तू जामुन पत्तों की तरह सुन्दर लग रही है। हे सुन्दरी! तुझे क्या-क्या चाहिए? सुन्दरी को गले में पहनने के लिए तागली चाहिए। सुन्दर व सुगठित देह वाली गोरी को और क्या चाहिए? गौरांगना को कन्दोरा

चाहिए। नवयौवना को और क्या चाहिए? सुन्दरी को पाँव में पहनने वाली कड़ियाँ चाहिए।

आन्टे बो डो लेमानी, बो डो लेमानी,
बो डो लेमानी आन्टे, बो डो लेमानी।
नवापुरा हाटी डो, बो डो लेमानी।
आम साजोन लेंगा लिजा, इञ पागड़ी सावा।
आम साजोन सोरई मूण्डी, इञ अंगा सावा।
आम साजोन नांगा किड़ी, इञ बावठा सावा।

हे लेमानी की माँ! तू नवापुरा बाजार चल। बाजार से तू लहंगा-लुगड़ा खरीदना, मैं पगड़ी खरीदूँगा। चल, लेमानी की माँ बाजार चल। तू पैर की बिछिया और हाथ की अँगूठी लेना, मैं कुरता लूँगा। चल लेमानी की माँ, बाजार चल। तू पैर की कड़ी खरीदना, मैं हाथ का चूड़ा खरीदूँगा।

थापटी गीत

घूंघरिया मोर नाचे, रे प्यारी घूंघरिया मोर नाचे।
सुन लइयो काहे की डाली पे मोरन बैठे।
साची कहियो काहे की डाली पे मोरन बैठे।
ओ बाई................ ओ।
महुआ डाल बैठे, रे प्यारी घूंघरिया मोर नाचे।
सुन लइयो काहे की डारी पे मोरन बैठे।
साची कहियो काहे की डारी पे मोरन बैठे।
ओ बाई....................... ओ।
इमली डाल बैठे, रे प्यारी घूंघरिया मोर नाचे।

सुनहरे पंख वाला मोर नाच रहा है। हे बहन! सुनो, कौन से वृक्ष की शाखा पर मोर बैठा है? हे बहन! सच कहो, कौन से वृक्ष पर मोर बैठा है? हे सखी! महुआ वृक्ष की शाखा पर मोर बैठा है। हे बहन! महुआ वृक्ष की शाखा पर कलगी वाला मोर बैठा है। हे बहन! कौन से वृक्ष पर मोर बैठा है? हे सखी! इमली वृक्ष पर मोर बैठा है।

राधा प्यारी रम जा रे, बहुत दिनों में आया।
सुन लइयो चुन चुन चावल, खिचड़ी पकायो।
साची कहियो चुन-चुन चावल, खिचड़ी पकायो।
ओ बाई..................... ओ।
राधा प्यारी जीम तो जा रे, बहुत दिनों में आया,
प्यासों को पानी पिला जा, बहुत दिनों में आया।
राधा प्यारी रम जा रे, बहुत दिनों में आया।

हे राधा बहिन! तुम बहुत दिनों के बाद हमारे यहाँ आयी हो। हे राधा बहिन! तुम कुछ दिन यहीं रुक जाओ। हे बहिन! हमने तुम्हारे लिए चावल चुनकर खिचड़ी पकायी है। हे बहिन! तुम भोजन करके ही जाना। हे राधा बहिन! हमारे मिलन की प्यास तो बुझा जाओ। हे राधा बहिन! तुम बहुत दिनों में आई हो, तुम रुक जाओ।

पांगी साडूब्बा मुंडाये, पांगी साडूब्बा डो।
केल्टा पांगी-पांगी डो, पांगी साडूब्बा डो।। 1।।
गाँजा बुबूलयेन मुंडाये, गाँजा बुबूलयेन डो।
केल्टा पांगी-पांगी डो, पांगी साडूब्बा डो।। 2।।
सीडू बुबूलयेन मारी, सीडू बुबूलयेन डो।। 3।।

हे भाई! आओ हम सब नृत्य करें। गोल-गोल एक घेरा बनायें। कंधे पर हाथ रखकर खूब नाचे गायें। ढोल-टिमकी बजाकर खूब नृत्य करें, करने में थकान भी नहीं होगी। नृत्य करने से हमारे देवी-देवता प्रसन्न होंगे। गांजा भी पी लो भई और रात-भर नाचो।

चिलोटी गीत

बारा बरासो डाई शिकारी जा, बारा बरासो डाई शिकारी।
जोड़ा भुण्डाकी डाई पाखड़ाएन जा, बारा बरासो डाई शिकारी जा।
टोने मा डोंगोरेन डाई सेनेए जा, बारा बरासो डाई शिकारी जा।
समोरे डोंगोरेन डाई शिकारी जा, बारा बरासो डाई शिकारी जा।
कुडुम्बो आड़ारेन डाई गूगलवेन जा, बारा बरासो डाई शिकारी जा।
म्यां बारी चोटो डाई हुंजूगे जा, बारा बरासो डाई शिकारी जा।
घोटाड़ी पाखड़ाएन डाई इरागे जा, बारा बरासो डाई शिकारी जा।

हे सखी! बारह वर्ष का मेरा भैया शिकारी है। वे कान्धे पर दो-दो बन्दूक लेकर शिकार को जाएँगें। हे बहिन! वो कौन से जंगल में शिकार को जाएँगें? हे सखी! वो सामने वाले जंगल में शिकार के लिए जाएँगें। वे कदम पेड़ की आड़ से निशाना लगाएँगें। एक दो वार करके ही वे हरिण को मार देंगे। वे हिरण को मारकर, कन्धे पर रखकर घर लौटेंगे। ऐसा मेरा शिकारी भैया बड़ा बांका है।

सिरिंज मा सिरिंज रेसमा सिरीये झामकलो,
आम गंगारू डो सिरीये झामकलो।
आम चुमारू डो सिरीये झामकलो।
कुआन डा हिण्डा डो सिरीये झामकलो।

बारी आना जे खोपा जे टूरा झामकलो।
सिरिंज मा सिरिंज रेसमा सिरीये झामकलो।

हे रेसमा! झूम-झूम कर गाओ। गीत गाओ, रेसमा झूम-झूम कर गीत गाओ। पाँव के घुँघरू बजाते हुए खूब नाचो-गाओ। सिर पर चोमल रखकर कुँए से पानी लाओ। दो आने के फूल लाओ। कुँए का ठण्डा पानी पियो। कानों में फूल खोंसकर खूब नाचो-गाओ। हे रेसमा! झूम-झूम कर खूब नाचो-गाओ।

चिलोरी गीत

भूरीकींज डो, भूरीकींज डो, भूरीकींज डो भूरीकीन्ज।। टेक।।
भूरीकींड़ भूरीकीन्ड़, कजरा वजरा भूरीकीन्ज।। 1।।
भूरी अमा टेपरे नांगा, ओठेटेन गेणेरे।। 2।।

छोटे-छोटे लड़के-लड़कियाँ खेत से जब शाम को घर आते हैं, तो वे अपना मनोरंजन करते हैं। होलगी (फड़कुल) की सुन्दरता का बखान करते हैं कि फड़कुल (होलगी) के छोटे-छोटे पैर और उसका चितकबरा रंग तथा उसके सुन्दर पंख और धीरे-धीरे पृथ्वी पर चलना, कितना अच्छा है। बच्चे देखकर बहुत प्रसन्न होते हैं। सुन्दरता में तो मयूर पक्षी ही सबसे श्रेष्ठ गिना जाता है। परन्तु कोरकू बच्चों ने फड़कुल को भी सुन्दर माना है।

संजोरी गीत

कोरकुओं की प्रसिद्ध देवी संझोरी देवी हैं, जो सबकी मनोकामना को पूर्ण करती है। इसी देवी से संबंधित कोरकू युवतियाँ पूजा करते समय यह गीत गाती हैं, जिसमें स्थानीय देवी-देवताओं के साथ प्राकृतिक छटा का भी वर्णन है।

अमा मायडो, जुमु चोय बोरी।
बोरी मुठीयेन, सिरी संजोरी।।
इंया मायडो जुमु गंगा सोमारी।
संजोर-संजोर माय डो पार टोले।।
संजोर-संजोर मायडो, हुंगा पारुम।
सागरी खोपा डो, पार वन्डे बाड़े रे।।
अमा माय जुमु कामाय बोरी।
इंया माय जुमू गोलन सेओ।।
अमा माय जुमू कैपबो कटलई।
संजोरी संजोरी जुमू रेडो माय।।
सड़ारी खोपा माय पार टोले।

तेरी माता का नाम क्या है? मेरी माता का नाम संजोरी देवी है। तेरी माता का नाम क्या है? मेरी माता का नाम गंगादेवी है। तेरी माता का नाम क्या है? मेरी माता का नाम साकौम है। तेरी माता का नाम क्या है? मेरी माता का नाम महुवा-फूल है। तेरी माता का नाम क्या है? मेरी माता का नाम गोलन देवी है।

शिकार गीत

बल्लान कोडोऊ, रिवकू जोमेवा, पारडी डाडा जा।
बल्लान वल्लानटेन, पारडी साडूब्बा।
भुरु-भुरुटेन ढिक्कारे साडूप्पे।

कोरकू लोग खयड़ा बैड़ा में कोदा कुटकी बारीक अनाज बो देते हैं

और उस कोदा को जंगली पशु-पक्षी खाते हैं, तब शिकारी लोग अपने खेत की फसल के लिए पशु-पक्षियों से रक्षा करते हैं, तथा साथ में शिकार भी हो जाता है। पहाड़-पहाड़ से शिकारी दौड़ता है, पशु-पक्षी भी उड़ते-भागते जाते हैं। पशुओं को मारने के लिए अब शिकारी नीचे पहाड़ की तराई में आता है। साम्हर भी भागता-भागता तराई में आकर रुक जाता है, तब शिकारी अंत में सांभर का शिकार करता है।

सत्कार गीत

जब कोई 'जांगड़ी' (शहरी या दूसरी जाति का) व्यक्ति कोरकुओं से अधिक या घनिष्ठ संबंध बढ़ाता है या बढ़ाना चाहता है, तब कोरकू अपनी वास्तविक स्थिति से उसे परिचित कराता है। जिसमें उसके क्षेत्र का भोजन क्या है? किस प्रकार उनका संकटपूर्ण जीवन है। आदि स्थितियों से अवगत कराता है।

इंया जागा बान हेजे रे टूड़ा।
इंया जागान आटा हुन्डारे रे टुड़ा।। 1।।
भादली कुटकीन जोमेबा रे टुड़ा।
इँया जागान गेले एटा पेज रे टुडा।। 2।।
इँया जागान लिजा बाँग घटाउ रे टुड़ा।
इंया जागा सिंगल मेरान गिटीजे रे टुड़ा।। 3।।

हे भाई! इस क्षेत्र में अब मत आना रे। इस क्षेत्र का खाना अजीब है और पहिनना भी विचित्र है। इस (देश) क्षेत्र का भोजन भादली, कुटकी और मक्का की रोटी है। आटे का पेज, ज्वार का रोटा है। इस क्षेत्र में कपड़ों की भी कमी है। इस क्षेत्र में अलाव (अग्नि) के आसपास सोना पड़ता है। हे लड़के! इस क्षेत्र में अब मत आना।

कृषि गीत

खेत में जब फसल पक चुकी होती है, तब उसकी रखवाली के लिए कोरकू पुरुष दिन-रात खेतों में ही रहता है। अपनी दयनीय हालत के कारण उसके तन पर नाम मात्र के वस्त्र रहते हैं। वह सारी रात 'अलाव' के पास बैठे-सोये अपना समय निकालता है। (घर में भी ठण्ड के मौसम में अलाव के आसपास परिवार सहित सोते हैं। करवटे बदल-बदल कर सोते हैं। इनकी निद्रा 'श्वान नींद' होती है। इनके शरीर में अग्नि के सहारे सोने से कई चट्ठे भी पड़ जाते है। फिर भी मस्त व सुखी हैं।) कोरकुओं में बिस्तरों एवं कपड़ों का अभाव रहता है।

खेत में जंगली जानवरों की आहट मिलने पर वह तुरन्त लाठी, बल्लम लेकर काँपते-काँपते दौड़ पड़ता है। तब वह ठण्ड से काँपते-काँपते सूर्यदेव से विनती करता है कि वह शीघ्र ही निकल आयें, ताकि उसकी ठण्ड दूर हो सके। यही सुन्दर भाव इस लोकगीत में वर्णित है।

इंयानी राम केन, बचाटिंग डिया मोमेज।
इंयानी अन्टे बाटे डा, गोमेज का डायेन।
टेइंज का झारा डा, इंजका सागेबा।
गफान आमकेन कोरखोज बा।
सागे झारा पेटेल, ऐसा ऐला हरेंजा।

हे सूर्य देवता! तुम शीघ्र निकल आओ। अब मुझसे ठण्ड सही नहीं जाती। अब तुम मुझे ठण्ड से बचा लो। देखो, अलाव में जलते-जलते लकड़ियाँ भी सभी बुझ चुकी। आग भी अब राख बन चुकी। लकड़ियाँ भी समाप्त हो गई। जंगली जानवर भी सता रहे हैं। तुम्हारे निकलते ही मैं शीघ्र ही

घास और लकड़ियाँ इकट्ठी कर लूँगा और ये जंगली जानवर डरकर जंगल में भाग जायेंगे। अग्नि के पास नहीं आयेंगे। हे सूर्य देवता! तुम शीघ्र निकलो और मेरी ठण्ड भगाओ।

वर्षा के चार माह कोरकुओं के लिए बहुत ही कष्टदायक होते हैं। इन दिनों में इनका संग्रहित अनाज समाप्त हो जाता है और मजदूरी भी नहीं लगती है। तब ये लोग बड़ी बेचैनी से फसल पकने का इन्तजार करते हैं। वैसे तो कोरकुओं के सामने जीवनयापन की समस्या सदैव ही बनी रहती है। फागुन के बाद ये लोग अन्य स्थानों पर गेहूँ कटाई करने अथवा अन्य मजदूरी करने चले जाते हैं। चैत्र माह से लगाकर (अषाढ़) जुलाई माह तक अनाज चलता है।

अनाज समाप्ति के बाद ये सूखा महुवा फुलाकर रखते हैं। वन्य पेड़-पौधों को तथा तुवर उबाल कर खाते हैं। मछली पकड़ते हैं, कुकुरमुत्ता या सूखे पेड़ की छाल या कंद को उबालकर खाते या अनाज को पीसकर पतला द्रव बना लेते हैं, जिसे 'पेज' कहते हैं। इसे पीते हैं। इतने पर भी भूख जब बहुत सताती है, तो महुवे की शराब (मूंसीडू) पीते हैं।

इस कोरकू लोकगीत में अनाज बोने से लेकर रोटी खाने तक का वर्णन है-

जाई बीडेवा जा माड़ी जाई वीडेवा।
घाघना खिटीन जा माड़ी जाई वीडेवा।। 1।।
जाई उमूनवा जा माड़ी जाई उमूनवा।
जाई खाडूबा जा माड़ी जाई खाडूवा।। 2।।
जाई फुलुवा जा माड़ी जाई फुलुवा।

जाई बीलीवा जा माड़ी जाई बीलीवा।।3।।
जाई इरेबा जा माड़ी, जाई इरेबा।
जाई दावनेवा जा माड़ी, जाई दावनेवा।।4।।
जाई टीयेबा जा माड़ी, जाई टीयेबा।
जाई आरुबा जा माड़ी, जाई आरुबा।।5।।
जाई जाटीबा जा माड़ी, जाई जाटीबा।
जाई जोमेबा जा माड़ी, जाई जोमेबा।।6।।

माली बीज बो रहा है। कठानी वाला घाघना खेत में बीज बो रहा है। चार–आठ दिन में बीज ऊग भी आया है। दिन–प्रतिदिन बीज बढ़ भी रहा है। खेत फसल से झूम उठी है। बीज में अब फूल भी आ गये हैं। अब बीज भी बैठ गया है और पक भी गया है। बीज अब कट गया है और बीज की दावन भी कर रहे हैं। लो, अब रुचे से पीस भी रहे हैं, और अब रसोई बनाकर खा भी रहे हैं। भोजन कर रहे हैं।

(वर्षान्त में आने वाला अन्न बारीक जिन्स जैसे कोदा, कुटकी, रालग्या, भादल्या, साँवा (साँवरया) और धान (चावल) इन्हीं का सेवन करते हैं।)

मृत्यु–गीत

यह आश्चर्यजनक किन्तु सुखद बात है कि कोरकू जनजाति में मृत्यु–गीत गाने की प्रथा है। कोरकू महिलाएँ मृत्यु भोज एवं सिडोली उत्सव के अवसर पर मृत्यु गीत गाती हैं। स्थान भेद के अनुसार गीतों को मिमलाव, फुलजगनी, गाथा, दशा या सिडोली सिरिन्ज कहते हैं।

गाथा गीतों में मृतक द्वारा किए गए कार्यों का बखान और उनकी प्रिय

वस्तुओं को स्मृति–चिह्न के रूप में गाया जाता है। गीतों का स्वर करुणामय होता है। कोरकू दशा–गीतों में घरेलू वस्तुओं के प्रतीक कई दार्शनिक अर्थ खोलते हैं।

ग्राम के किसी प्रतिष्ठित व ख्याति प्राप्त कोरकू के मरने पर उसकी स्मृति में काष्ठ–स्तम्भ 'मण्डा' लगाने की प्रथा है। मण्डा स्थापित करने के लिए तिथि निश्चित की जाती है। इस अवसर पर मण्डा स्थापित किए जाने तक कोरकू महिलाएँ दशा–गीत गाती है।

ए माय डो, ए माय डो।
इञाआबा टुंगान ओलेन,
हिंगान बाङ डोगे माय मा रे।
ए बेटा, ए बेटा।
आमा आबा सवा मोका धरती टालान,
उकूएन जा बेटा मा रे।
ए माय डो, ए माय डो।
इञाआबा हण्डा गागार, घाले मा डो माय मा रे।
ए बेटा, ए बेटा।
आमा आबा नी हण्डा गागार,
उरा धराण टाला गाड़ाटिञ के बेटा मा रे।
ए माय डो, ए माय डो।
इञा आबा नी डोबाकेन, घाले मा डो माय मा रे।
ए बेटा, ए बेटा।
आमा आबा नी डोबाकेन,
खूंटा टालान टोलकेन जा बेटा मा रे।

हे माँ! पिताजी कहाँ गए है? दिखाई नहीं देते। हे बेटा! तुम्हारे पिताजी जमीन में सवा हाथ नीचे गड़े हैं। हे माँ! पिताजी का धन वाला हण्डा कहाँ है? हे बेटा! धन वाला हण्डा घर में धराण के नीचे गड़ा है। हे माँ! पिताजी के बैल कहाँ है? हे बेटा! बैल गोहाल में खूंटे से बधें हैं।

नाचोलीटेन हाजे डाई,
नाचोलीटेन हाजे मा रे।
आमा कोन डो आमा किमिन,
जोंदरा घाटो चौका चाउल समाके जा डाई।
आमा कोन डो आमा किमिन,
गूं सोकड़ा मेंढा बकरा समाके जा डाई।
नाचोलीटेन हाजे डाई,
नाचोलीटेन हाजे मा रे।

इस गीत में पूर्वजों को पर्व-त्यौहार के अवसर पर आमंत्रण दिया गया है-

हँसी-खुशी से आओ भाई। तुम्हारे लड़के-बहू ने ज्वार का घाटा और चावल बनाये हैं। तुम्हारे लड़के-बहू ने रोटी और बकरा बनाया है। हे भाई! आओ, हँसी-खुशी से आओ।

रिपि रिपि डो रिपि कोरा,
रिपि कोराटेन हाजे जा आबा हाजे मा रे।
रागो बकी डो रिसना बकी,
रिपि कोराटेन हाजे जा आबा हाजे मा रे।

ए बेटा, ए बेटा।
इञा साटी लियेन बारा गाड़ी कासा पूजा,
रेच्या टिञ के चुपर हाजे, रेच्या टिञ के चुफर हाजे?

हे पिताजी! रास्ता साफ है। इस रास्ते से आप आना। रोते हुए या गुस्से से मत आना। आप हँसी-खुशी से आना। हे बेटा, हे बेटा! मेरी छाती पर बारह गाड़ी मिट्टी और कूड़ा-करकट पड़ा है, मैं कैसे आऊँ? मेरी छाती पर बारह गाड़ी काँटे पड़े है, मैं कैसे आऊँ?

बागी रे रे ना डो, बागी रे रे ना।
माय देवतराय गांवा मेरान, गाड़ा घाटोन डो,
बागी रे रे ना।
जाम्बू सिञेन डो इटान,
माय इञारावा रागो उरा आरूकेन,
बागी रे रे ना डो, बागी रे रे ना।

मेरी माँ! दुश्मन के समान मुझे छोड़कर चली गई। मेरी माँ की आत्मा डेढ़तलाई गाँव के पास एक नदी के किनारे जामुन वृक्ष के नीचे घर बनाकर रह रही है।

पन्तरी कोरान डो, झांझरी बोरे मेलानकेन।
सेने डो सोनाय, सेने डो सोनाय।
आमा डो कनकार के, झारी नी टेंबियाटेन डा नी आनुए।
आमा डो कनकार के, सोकड़ा नी दाड़ी डो इडीये।

मेरी माँ दुर्गम रास्ते से गाँव के बाहर बोर वृक्ष के नीचे आई है। जा, सोनाय तेरी सास को एक लोटा पानी और रोटी-दाल दे आ। मेरी माँ बहुत भूखी-प्यासी है। हे सोनाय! जल्दी जा। माँ को दाल-रोटी दे आ।

टोटी री सब्बो डामा गोलाए
रजालिया मान्डी आडी राट।।
मोनोइ पिटेर एटा मोनोई चावड़ी केन नंडोबा।
चोज बोकोनी गंगा मिमिलाटेनबा।।
सुरता कोनटे जो टुड़ा पुटायेनबा।
सुरता खाड डाई जो सगुन पुटायेनबा।।
सुरता जे ठानीन कोनटे पुटायेनबा।
कोनटे डुडमा जो गाथा उथायो।।

आधी रात बीत गई। रजालिया! बोल यह उत्सव किसने रचाया। पाँच पितरों की याद में इन पाँच पंचों को किसने मिलाया। किस भले व्यक्ति ने, यह पवित्र गंगा बहायी। हे भाई! सुरता के बेटे ने यह कार्य किया। उसकी पत्नि ने दीपक में तेल का काम किया। उसके बड़े लड़के ने बाती का काम किया और उसकी पुत्रवधू ने दीपक को प्रज्जवलित किया।

डुडमा ने पिता की याद में, इन पंचों को एकत्र किया। अब सुरता के पौत्र गिन्डू ने यह उत्सव रचाया। उसकी पौत्रवधू धन्य है, जिसने दीपक की लौ जलाई। हे भाई! सुरता की पत्नि धन्य है, जिसने ऐसे पुत्र रत्न को जन्म दिया। सुरता की बहू धन्य है, जिसने यह 'गाथा' (मण्डा) उत्सव रचा। सुरता का परिवार भाग्यशाली है, जिसने इस पवित्र कार्य को किया। इस पवित्र गंगा को मिलाप कराया। सभी पितरों को आमंत्रित किया। सभी पंचों को जुटाया। (एक लकड़ी के चौड़े तख्ते पर छेनी से चार खानों में चार

आकृति क्रमशः सूर्य, चन्द्र, घुड़सवार एवं पूर्वज के चित्र बनाते हैं, फिर उन्हें श्मशान में बाजे-गाजे के साथ ले जाकर मृतक की समाधि स्थल पर गाड़ देते है। इस प्रथा को मण्डा (गाथा) उत्सव कहते हैं।)

अकादमी द्वारा प्रकाशित अनुषंग पुस्तिकाएँ



बघेलखण्ड के लोकगीत

बघेलखण्ड में परम्परागत रूप से गाये जाने वाले गीत

संकलन–लखन प्रतापसिंह 'उरगेश' मूल्य–35/–

भरथरी

छत्तीसगढ़ी लोक गाथा भरथरी पर केन्द्रित

संकलन–नंद किशोर तिवारी, मूल्य–50/–

गणगौर

निमाड़ी आनुष्ठानिक पर्व गणगौर के परम्परागत गीत

संकलन–बसंत निरगुणे/रमेश चन्द्र तोमर, मूल्य–50/–

मालवा के लोकगीत

मालवा अंचल में विभिन्न अवसरों पर गाये जाने वाले परम्परागत गीत

संकलन–चन्द्रशेखर दुबे, मूल्य–50/–

बुन्देलखण्ड के संस्कार गीत

बुन्देली संस्कार, विधि-विधान पर केन्द्रित गीत

संकलन–सुधीर तिवारी/माधव शुक्ल 'मनोज', मूल्य–50/–

कहे जन सिंगा

निमाड़ी संत सिंगाजी और उनके निर्गुण भजन

संकलन–डॉ. श्रीराम परिहार, मूल्य–50/–

बसन्त गीत

मौखिक साहित्य के भोजपुरी बसंत गीत

संकलन–कर्मेन्दु शिशिर, मूल्य–50/–



ईसुरी

बुन्देली के अद्वितीय कवि ईसुरी और उनकी फागें

संकलन–लोकेन्द्र सिंह नागर, मूल्य–50/–

कुमाऊँनी लोकगीत

कुमाऊँ की लोक परम्परा के गीत

संकलन–डॉ. देवसिंह पोखरिया, मूल्य–50/–

कहनात

बुन्देली लोकोक्तियाँ और कहावतें

संकलन–रमेश दत्त दुबे, मूल्य–50/–

कृष्ण लीला गीत

ब्रज की लोक परम्परा के श्रीकृष्ण भक्ति गीत

संकलन–रामनारायण अग्रवाल, मूल्य–50/–

प्रेमगीत

प्रदेश की प्रमुख जनजातियों में गाये जाने वाले प्रेमगीत

सम्पादक–कपिल तिवारी, मूल्य–50/–

प्रेमगीत

मध्यप्रदेश की आँचलिक परम्परा में गाये जाने वाले प्रेमपरक गीत

सम्पादक–कपिल तिवारी, मूल्य–50/–

पूर्वांचल के लोकगीत

अवधी और भोजपुरी संस्कार गीत

संकलन–बी.एल. द्विवेदी, मूल्य–50/–

निमाड़ी लोक गीत

निमाड़ी लोक जीवन सम्बन्धी गीत

संकलन–रामनारायण उपाध्याय, मूल्य–50/–



मालवा की लोककथाएँ

मालवा अंचल में परम्परागत रूप से प्रचलित लोककथाएँ

संकलन–प्रहलाद चंद्र जोशी, मूल्य–50/–

बुन्देली का फाग साहित्य

बुन्देली फागें तथा मूर्धन्य फागकार

संकलन–श्याम सुन्दर बादल, मूल्य–50/–

मध्यप्रदेश का लोकनाट्य माच

मध्यप्रदेश के मालवा अंचल की लोकनाट्य परम्परा

संकलन–डॉ. शिवकुमार मधुर, मूल्य–50/–

पाबूजी की पड़

राजस्थानी चरित नायक और लोक देवता पाबूजी की शौर्य गाथा

संकलन–डॉ. महेन्द्र भानावत, मूल्य–50/–

ख्याल अलीबख्श

प्रसिद्ध कवि, गायक तथा कृष्ण भक्त अलीबख्श और उनका ख्याल

संकलन–रेवती रमण शर्मा,मूल्य–50/–

बिहार के संस्कार गीत

जन्म से मृत्यु तक के अवसरों पर गाये जाने वाले गीत

संकलन–विन्ध्यवासिनी देवी, मूल्य–50/–

बसन्त के रंग

बुन्देली लोक कवि ईसुरी की फागों का चयन

संकलन–रमेश गुप्त, मूल्य–50/–

वृक्ष पुराण

लोक परम्परा में वृक्षों का महत्त्व

संकलन–महेश कुमार मिश्र 'मधुकर', मूल्य–50/–

तँवरधारी संस्कार गीत

चम्बल क्षेत्र के संस्कार गीतों पर केन्द्रित

संकलन–भगवान सहाय शर्मा, मूल्य–50/–



गोंड जनजातीय गीत

गोंड जनजातीय विविध अवसरों के गीतों पर केन्द्रित

संकलन–रूपसिंह कुशराम, मूल्य–50/–

मालवी कथाएँ

मालवी लोक कथाओं पर केन्द्रित

संकलन–डॉ. एच.एस. गुगालिया, मूल्य–50/–

बुन्देली वैवाहिक गीत

बुन्देली वैवाहिक गीतों पर केन्द्रित

संकलन–डॉ. सुधा गुप्ता, मूल्य–50/–

कोरकू संस्कार गीत

कोरकू जनजातीय संस्कार गीतों पर केन्द्रित

संकलन–डॉ. धर्मेन्द्र पारे, मूल्य–50/–

निमाड़ी गाथा रायसल

निमाड़ी गाथा पर केन्द्रित

संकलन–डॉ. धर्मेन्द्र पारे, मूल्य–50/–

कुमाऊँनी गाथा राजूला मालूशाही

कुमाउँनी गाथा पर केन्द्रित

संकलन– डॉ. देव सिंह पोखरिया, मूल्य–50/–

भीली लोककथाएँ

भीली कथाओं पर केन्द्रित

संकलन– गोविन्द गेहलोत, मूल्य–50/–

ढोलाकुँवर

कोरकू जनजातीय गाथा

संकलन–डॉ. धर्मेन्द्र पारे, मूल्य–50/–

काल दर्शन

भारतीय काल परम्परा पर केन्द्रित

संकलन–महेश कुमार मिश्र 'मधुकर', मूल्य–50/–



भील जनजातीय गीत

भील जनजाति के संस्कार गीतों पर केन्द्रित

संकलन-गोविन्द गेहलोत/महेश चन्द्र शांडिल्य, मूल्य-50/-

भीली कथाएँ

भील जनजाति का कथा साहित्य

संकलन-डॉ. एच.एस. गुगालिया, मूल्य-50/-

संस्कृति सलिला नर्मदा

नर्मदा के तटों पर केन्द्रित निबन्ध

संकलन-डॉ. श्रीराम परिहार, मूल्य-50/-

बारेला

जनजातीय जीवन और साहित्य पर केन्द्रित

संकलन-डॉ. गुलनाज़ तँवर, मूल्य-50/-

कहावत कथांजलि

बुन्देली कहावतों पर आधारित कथाएँ

संकलन-रमेश गुप्त, मूल्य-50/-

सौंर

बुन्देलखण्ड में निवासरत जनजाति का सांस्कृतिक अध्ययन

संकलन-डॉ. ओमप्रकाश चौबे, मूल्य-50/-

भीली गीत एवं कहावतें

भील जनजातीय गीतों एवं कहावतों पर केन्द्रित

संकलन-बद्रीलाल मालवीय, मूल्य-50/-

पांडवों की भारत गाथा

राजस्थान में प्रसिद्ध पण्डुन के कड़े गाथा पर आधारित

संकलन-डॉ. महेन्द्र भानावत, मूल्य-50/-

सम्पर्क

निदेशक, आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादमी,
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, मुल्ला रमूजी संस्कृति भवन, आधारतल,
बाणगंगा, भोपाल-462 003 फोन/फैक्स : 0755-2551878, 2760668

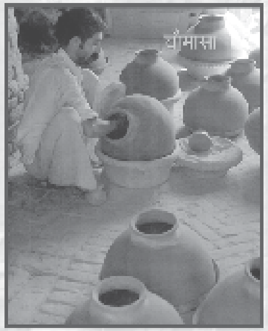
● **www.mpculture.in** ● **E-mail:mplokkala@rediffmail.com**

जनजातीय और लोक वाचिक परम्परा पर केन्द्रित चौमासिक पुस्तिका 'चौमासा'

सदस्यता नियम

चौमासा की एक प्रति का मूल्य	20/
अनुषंग पुस्तिका की एक प्रति का मूल्य	50/-
चौमासा की वार्षिक सदस्यता शुल्क	50/-
चौमासा की वार्षिक सदस्यता शुल्क अनुषंग पुस्तिका के साथ	100/-
चौमासा पत्रिका का आजीवन सदस्यता शुल्क	1500/-









आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् के प्रकाशन

जनपदीय वाचिक परम्परा पर केन्द्रित पुस्तकें



बघेली संस्कृति और साहित्य

मालवी संस्कृति और साहित्य

बुन्देली संस्कृति और साहित्य

निमाड़ी संस्कृति और साहित्य

बुन्देली लोक साहित्य, परम्परा और इतिहास

बुन्देली इतिहास और संस्कृति

फाग साहित्य

ईसुरी का फाग साहित्य

जनपदीय संस्कार गीत

जनपदीय संस्कार गीत

आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् के प्रकाशन

विविध विषयों पर आधारित प्रकाशन

धार एवं माण्डू की सूफी संत परम्परा

हज़. कमालुद्दीन चिश्ती रह. और उनका युग

अमर सागर-1

अमर सागर-2

अमृतस्य नर्मदा

बुन्देलखण्ड की मृदंग वादन परम्परा

बुन्देली परिपाटी

आल्हा

लोक में कबीर



आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् के प्रकाशन

चित्र और वस्त्र परम्परा पर केन्द्रित पुस्तकें

जिरौती
मध्यप्रदेश के निमाड़ जनपद की चित्रकला -संकलन-वसन्त निरगुणे, मूल्य-300/-

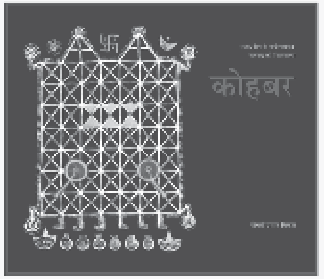
सुरौंती
मध्यप्रदेश के बुन्देलखण्ड जनपद की चित्रकला -संकलन-महेश कुमार मिश्र, मूल्य-300/-

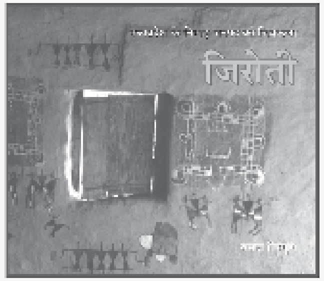
कोहबर
मध्यप्रदेश के बघेलखण्ड जनपद की चित्रकला -संकलन-गोमती प्रसाद विकल, मूल्य-300/-

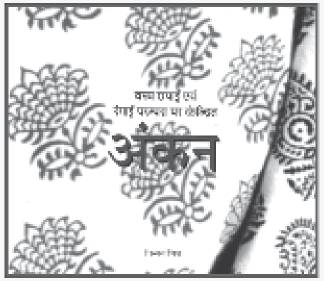
अंकन
वस्त्र छपाई एवं रंगाई परम्परा पर केन्द्रित- संकलन-चिन्मय मिश्र, मूल्य-300/-

सुसमन
वस्त्र बुनाई परम्परा पर केन्द्रित- संकलन-सम्पादित, मूल्य-20/-









आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् के प्रकाशन

ऑडियो/वीडियो सी.डी.

भोपाल की चारबेंत गायिकी की सीडी- सम्पादित, मूल्य-50/-
आदिवर्त संग्रहालय-खजुराहो- सम्पादित, मूल्य-50/-
सरमन गाथा की सीडी- सम्पादित, मूल्य-100/-
हरदौल गाथा की सीडी- सम्पादित, मूल्य-100/-
सरमन गाथा की सीडी- सम्पादित, मूल्य-100/-
मध्यप्रदेश के आदिवासी और लोकनृत्यों की सीडी- सम्पादित, मूल्य-200/-
भारत आदिवासी और लोकनृत्यों की सीडी- सम्पादित, मूल्य-200/-





आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् के प्रकाशन